अध्याय 4

पवित्र जीवन जीना, भाई-चारे का प्रेम, और द्वितीय आगमन

पवित्र जीवन जीने के लिए प्रोत्साहन (4:1–8)

[1]इसलिये हे भाइयो, हम तुम से विनती करते हैं और तुम्हें प्रभु यीशु में समझाते हैं कि जैसे तुम ने हम से योग्य चाल चलना और परमेश्वर को प्रसन्न करना सीखा है, और जैसा तुम चलते भी हो, वैसे ही और भी बढ़ते जाओ। [2]क्योंकि तुम जानते हो कि हम ने प्रभु यीशु की ओर से तुम्हें कौन कौन सी आज्ञा पहुँचाई। [3]क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है कि तुम पवित्र बनो: अर्थात् व्यभिचार से बचे रहो, [4]और तुम में से हर एक पवित्रता और आदर के साथ अपनी पत्नी को प्राप्त करना जाने, [5]और यह काम अभिलाषा से नहीं, और न उन जातियों के समान जो परमेश्वर को नहीं जानतीं, [6]कि इस बात में कोई अपने भाई को न ठगे, और न उस पर दाँव चलाए, क्योंकि प्रभु इन सब बातों का पलटा लेनेवाला है; जैसा कि हम ने पहले ही तुम से कहा और चिताया भी था। [7]क्योंकि परमेश्वर ने हमें अशुद्ध होने के लिये नहीं, परन्तु पवित्र होने के लिये बुलाया है। [8]इस कारण जो इसे तुच्छ जानता है, वह मनुष्य को नहीं परन्तु परमेश्वर को तुच्छ जानता है, जो अपना पवित्र आत्मा तुम्हें देता है।

आयत 1. इस आयत के संदर्भ में, **इसलिए का** तात्पर्य "अंततः" है जो यह बताता है कि पौलुस इस पत्री के अंतिम मुख्य विषय पर यहाँ चर्चा करने जा रहा है (देखें इफिसियों 6:10; फिलिप्पियों 4:8)। उसने मसीह के द्वितीय आगमन के बारे में पूर्ववर्ती आयतों में चर्चा की है (3:13), और वह यहाँ इस विषय पर जो इस पत्री का अंतिम मुख्य विषय है, विस्तृत चर्चा करने जा रहा है।

उसने पुनः इस कलीसिया को अपने प्रिय सम्बोधन, हे **भाइयो** से सम्बोधित किया है (1:4 पर आधारित टिप्पणी देखें)। उसने उनसे **विनती** की और **प्रभु**

यीशु में (अपने अधिकार का प्रयोग करते हुए) उन्हें **समझाया** कि वे उस शिक्षा के अनुसार **चाल चलें** जो उन्होंने उससे थिस्सलुनीके में **सीखा** है। यहाँ "चाल चलने" का तात्पर्य मसीही जीवन एक संकरे मार्ग में चलने के बराबर है, को दर्शाता है (2:12; मत्ती 7:14; KJV) और जिसका चित्रण वचन के द्वारा किया गया है, जिसमें मसीहियों को **परमेश्वर को प्रसन्न** करने के लिए चलना या जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित किया गया है। मसीहियों को अन्य लोगों के जैसा जीवन नहीं जीना है (गलातियों 1:10), बल्कि जैसा परमेश्वर चाहता है उनको वैसे जीना है (2:4, 15)। वाक्यांश **जैसा तुम चलते भी हो** यह दर्शाता है कि पौलुस ने थिस्सलुनीकियों को ऐसा समझा जैसा कि वे सत्य में चलते हैं जो उनको सिखाया गया था। यद्यपि कई प्राचीन हस्तलिपियों में यह वाक्यांश नहीं पाया जाता है परंतु सिनैटिकस, एलेक्जेंड्रीनस, वेटिकेनस एवं अन्य लेखों में यह पाया जाता है। कुल मिलाकर, ये सारे प्रमाण यह समर्थन करते हैं कि यह सामग्री इस पत्री का भाग है।

तीमुथियुस ने थिस्सलुनीके से लौटने के बाद यह समाचार दिया कि कुल मिलाकर थिस्सलुनीके के लोग पौलुस की शिक्षा का अनुकरण कर रहे हैं (3:6)। यहाँ पौलुस उनसे निवेदन करते हुए उन्हें उत्साहित कर रहा था कि वे परम्परा की आज्ञा पालन में **और भी बढ़ते** जाएं (2 थिस्सलुनीकियों 3:6) या फिर उस शिक्षा में बढ़ते जाएं जो उसने उन्हें दी थी। वह उनसे निवेदन कर रहा था कि वे उसको (यीशु) अपना स्वामी बनाएं और उसके हरेक निर्देश का पालन करें।

आयत 2. पौलुस ने उन्हें स्मरण दिलाता है कि उन्हें **कौन कौन सी आज्ञा पहुँचाई गई** थीं। "आज्ञा" यूनानी भाषा παραγγελία (*पारांगेलिया*), से लिया गया है जो "संभवतः यह सैनिकों को दी गई आज्ञा जैसा है। इससे यह अर्थ निकाला जा सकता है कि यह एक अधिकारपूर्ण आज्ञा है।"[1] इस शब्द का अर्थ "निर्देशन" (NIV) या "शिक्षा" भी हो सकता है। पौलुस ने यह भी स्पष्ट किया कि ये आज्ञाएं उसकी ओर से नहीं हैं बल्कि **प्रभु यीशु की ओर से** दी गई हैं।

जो वचन उनको दिया गया था वह "मनुष्य का वचन" नहीं था (2:13), बल्कि वह "परमेश्वर का वचन" था। इस बात को तब उन्हें स्मरण दिलाया गया था और इसे अभी भी स्मरण किया जाना चाहिए, क्योंकि हम परमेश्वर के वचन की गम्भीरता को बहुत हल्का समझते हैं।

आयत 3. काम की बात यह थी कि पौलुस अब उन्हें परमेश्वर की इच्छा स्मरण दिलाता है – कि वे व्यभिचार से **बचे रहें,** जिसमें पवित्रीकरण (ἁγιασμός, *हागियासमोस*) निहित है। "पवित्रीकरण" को "पवित्रता" (NIV) से भी अभिव्यक्त किया जा सकता है। पवित्र बनने का अर्थ पाप से शुद्ध होना है, अलग किया जाना है। परमेश्वर हमारे मसीही जीवन के आरंभ में ही हमें शुद्ध करता है (प्रेरित 22:16) और इसके साथ ही साथ जैसे जैसे हम अपने

मसीही जीवन में आगे बढ़ते हुए परमेश्वर की ज्योति में चलते हैं तो हमें अपने पापों का पता चलता है और अपने पापों का अंगीकार कर उससे पश्चाताप करते हैं तो वह हमें हमारे पापों से शुद्ध करता है (1 यूहन्ना 1:7–10)। वह यह इसलिए ऐसा करता है ताकि अंतिम न्याय (5:23; 1 पतरस 1:13–16 से तुलना करें) के समय हम "निर्दोष" (3:13) पाए जाएं। पवित्र होने का अर्थ अलग किए जाने से भी है ताकि परमेश्वर पुराने नियम के लेवी गोत्र के लोगों के समान, विशिष्ट कार्य के लिए हमें प्रयोग करे (गिनती 3:11–13)। मसीहियत के संदर्भ में, सभी मसीही परमेश्वर की विशेष सम्पत्ति है (1 पतरस 2:5, 9), जो उसकी विशिष्ट सेवा के लिए अलग किए गए हैं।

क्योंकि मसीही लोग परमेश्वर के हैं इसलिए उन्हें सावधानीपूर्वक उसकी **इच्छा** को पूरा करना है। जिस विशेष बात के लिए पौलुस चिंतित था वह यह थी कि वे अपने आपको व्यभिचार से बचाए रखें। व्यभिचार यूनानी शब्द πορνεία (*पॉरनैया*) का हिन्दी अनुवाद है जिसमें सभी प्रकार के अनैतिक यौन संबंध शामिल है – इसमें समलैंगिगता भी शामिल है (तुलना करें 1 कुरिंथियों 6:9–11)। एफ. एफ. ब्रूस के अनुसार, "जबकि *पॉरनैया* का प्राथमिक अर्थ वेश्याओं (*पॉरनाई*) के साथ सहवास से है … लेकिन इसमें किसी भी प्रकार का अनैतिक यौन संबंध शामिल हो सकता है।"[2]

यौन अनैतिकता, संसार के उस भाग के उस समय के नगरों में प्रचलित था। उदाहरण के लिए कुरिन्थुस, इस शहर से मात्र 175 मील दक्षिण की ओर स्थित था जो अफ्रोडाइट देवी के मंदिर के लिए प्रचलित था। एक प्राचीन प्रतिलिपि यह बताती है कि इस मंदिर में एक हजार वेश्याएं थी जो पुरुष आराधकों का मनोरंजन करतीं थीं। कुरिंथियों की कलीसिया के समान (1 कुरिन्थियों 5), थिस्सलुनीके की कलीसिया में अनैतिक संबंध के विषय में प्रमाण उपलब्ध नहीं है लेकिन इस प्रकार का आचरण प्रथम सदी की संसार के उस भाग में हमेशा ही एक नैतिक पतन का खतरा बना हुआ था। यह एक विशेष खतरा है जिसे पौलुस यहाँ संबोधित कर रहा है।

आयत 4. अपनी पत्नी यूनानी वाक्यांश ἑαυτοῦ σκεῦος (*हेआउटू स्केउओस*) का उचित अनुवाद है। "अपनी देह पर नियंत्रण रखना" (NIV) और "अपने लिए पत्नी करना" (RSV) यूनानी वाक्यांश का आंशिक अनुवाद है, लेकिन ये दोनों "अपना पात्र" वाक्यांश समझने के लिए दो मुख्य विकल्प है। इन विकल्पों में देखने वाली सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि बाइबल में दूसरे स्थान पर कहीं भी पत्नी के लिए "पात्र" शब्द का प्रयोग नहीं किया गया है जबकि मानवीय देह को "पात्र" करके संबोधित किया गया है (1 शमूएल 21:5; प्रेरित 9:15; रोमियों 9:21–23; 2 कुरिंथियों 4:7; 2 तीमुथियुस 2:21)। यह तथ्य सबसे अधिक संभावना यह बताता है कि जब पौलुस ने **नियंत्रण** रखने

को कहा तो वह यह कह रहा था कि सभी मसीहियों को अपनी देह पर नियंत्रण रखना चाहिए और यह नियंत्रण **पवित्रता और सम्मान** के साथ किया जाना चाहिए, "जो पवित्र और आदरणीय हो" (NIV)। जब इसका अनुवाद इस प्रकार किया जाता है तो यह आयत रोमियों 6:19 के समतुल्य बन जाती है, "अपने अंगों को पवित्रता के लिये धर्म के दास करके सौंप दो।"

इस अनुवाद में सबसे बड़ी समस्या यूनानी शब्द κτάομαι (*क्टोमाई*) है, जिसको "नियंत्रण करना" अनुवाद किया गया है। कई बार इसका अनुवाद "प्राप्त करना" या इसके समतुल्य किया गया है। फिर भी, जेम्स हॉप मूल्टन और जॉर्ज मिलिगन मानते हैं इस अनुच्छेद में इस शब्द का सबसे उपयुक्त अनुवाद "नियंत्रण" है। उन्होंने कहा, " 'अपने देह पर धीरे से सम्पूर्ण नियंत्रण प्राप्त करने' को 1 थिस्सलुनीकियों 4:4 में प्राथमिकता दी जा सकती है।"[3]

आयत 5. कामुकता का **आचरण** करने के बजाय सभी को अपनी देह पर नियंत्रण रखना चाहिए ("in passionate lust"; NIV)। यहाँ, यूनानी शब्द πάθος (*पाथोस*) का अनुवाद काम अभिलाषा (कामवासना या कामुकता) किया गया है जिसका अर्थ सभी अनियंत्रित आकर्षण से है परंतु यहाँ विशेषकर इसका संबंध कामुकता से है।[4] "काम अभिलाषा" (काम वासना) यूनानी शब्द ἐπιθυμία (*इपिथुमिया*) का हिंदी अनुवाद है, जिसमें सभी प्रकार की प्रबल इच्छाएं – आमतौर पर जो बुरी हैं, सम्मिलित है, लेकिन कभी-कभी यह इच्छाएं अच्छी भी हो सकती है (2:17)।

मसीही का अपने देह पर नियंत्रण उस **अन्य जाति** व्यक्ति से भिन्न है जो परमेश्वर को नहीं जानता है। "अन्यजातियों" की यौन अनैतिकता की अवधारणा चार्ल्स वड्र्सवर्थ के निम्न लेख से स्पष्ट है: "यहाँ घातक पाप अस्वीकार किया गया है … माँ बाप के द्वारा अनदेखा किया गया है (*Terent*. Adelph. I. ii. 21), नैतिकतावादियों द्वारा इसकी सराहना की गई है (*Horat*. I Sat. ii. 32; cp. *Cicero* pro Coelis 48), और मूर्तिपूजकों के मतों के द्वारा विशेषकर यूनानियों और कुरिन्थुस के मत, जहाँ वर्तमान में संत पौलुस थे …, पवित्र माना गया है।"[5]

अक्षरशः "अन्य जातियों" का अर्थ "राष्ट्र" है। ये गैर यहूदी राष्ट्र मूर्तिपूजक थे जिन्होंने अपनी देह पर नियंत्रण नहीं रखा क्योंकि वे परमेश्वर को नहीं जानते थे। अन्यत्र पौलुस ने हमें बताया है कि परमेश्वर ने इन अन्य जातियों को उन्हीं की हालत पर छोड़ दिया क्योंकि वे परमेश्वर के ज्ञान को नहीं समझना चाहते थे (रोमियों 1:26–28)। इस पत्री के परिचय में उल्लेख किया गया है कि अधिकांश थिस्सलुनीकी अन्यजाति के थे परंतु जब उन्होंने सुसमाचार का अनुमोदन किया तो वे आत्मिक रूप से यहूदी बन गए थे (देखें रोमियों 2:28, 29)।

आयत 6. इस आयत का संदर्भ यह दर्शाता है कि यहाँ जो **बात** बोली गई है उसमें अपनी देह या आवेग पर नियंत्रण करने की आवश्यकता पर जोर दिया गया है इसके बजाय कि उचित बंधन से आगे बढ़ें और **अपने भाई को ठगे**। किस प्रकार किसी की अनैतिकता "अपने भाई को ठग सकती है"? पौलुस अपने भाई को ठगने के संबंध में यह कह रहा होगा कि उसको ठगकर उसकी पत्नी के साथ कुकर्म करे (देखें निर्गमन 20:17), या फिर अविवाहित व्यक्ति के साथ गैरकानूनी तरीके से यौन संबंध स्थापित करे या फिर किसी व्यक्ति की होने वाली पत्नी का अनुचित फायदा उठाये। पौलुस ने थिस्सलुनीकियों से और हमारे समाज से जहाँ यौन पाप के बारे में लोगों का ढीला ढाला रवैया है, से कहता है कि ऐसी अनैतिकता से बचे रहो क्योंकि **प्रभु इन सब बातों का पलटा लेने वाला** है ("ऐसे-ऐसे पाप करने वालों को प्रभु दंडित करेगा"; NIV)। "पलटा लेना" यूनानी भाषा ἔκδικος (*एडिकोस*) का अनुवाद है, जो सच्चे न्याय में "बराबर होने" के भाव का समर्थन नहीं करता है। इसके अलावा इस शब्द का प्रयोग, नए नियम में केवल रोमियों 13:4 में पाया जाता है, जहाँ पर यह वैधानिक न्यायाधीश से संबंधित है। आज कई लोग यह कहते है कि परमेश्वर हमको दण्ड देने के लिए हमसे अत्यधिक प्रेम करता है लेकिन पौलुस इस विचार से सहमत नहीं था। इससे बढ़कर उसने उन्हें यह स्मरण दिलाया कि जब वह उनके साथ था तो पहले से ही उसने उन्हें चिता दिया था।

आयत 7. परमेश्वर, लोगों को मसीही बनने के लिए सुसमाचार के द्वारा बुलाता है (2 थिस्सलुनीकियों 2:14)। पौलुस ने कहा**, परमेश्वर ने हमें अशुद्ध होने के लिये नहीं, परन्तु पवित्र होने के लिये बुलाया है** । यह उस जीवन के लिए नहीं है जहाँ हम पहले की भाँति पाप करते रहे बल्कि उस जीवन के लिए जहाँ धीरे-धीरे पाप पर विजय प्राप्त करने के लिए परमेश्वर हमारी सहायता करता है। "अशुद्धता" और "शुद्धता" में भिन्नता दो यूनानी पूर्वसर्गों से की जा सकती है [ἐπὶ] *एपि* (on the basis of उसके आधार पर) और [ἐν] *एन* (क्षेत्र के अंतर्गत, in the sphere of)।"[6] क्या हम ऐसे लोग हैं जो पापमय और शुद्धता के बीच विभेद करते हैं और पाप से बचे रहते हैं?

आयत 8. वह मसीही **जो** इस आज्ञा को कि हमें पवित्र जीवन जीना है, **तुच्छ जानता** है वे **मनुष्यों को नहीं** बल्कि **परमेश्वर**, अर्थात सृष्टि के सृष्टिकर्ता **को तुच्छ जानता है**। "तिरस्कार करने" के लिए जो यूनानी क्रिया ἀθετέω (*आथेटेओ*) का प्रयोग किया गया है वह "वैधानिक रूप में जैसे कि वसीयत (गलातियों 3:15) या उसी के समतुल्य कोई भी कागजात 'बदलने' के लिए प्रयोग किया गया है।"[7]

इससे पहले कि मसीही लोग ऐसा व्यवहार करें हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि हम उस परमेश्वर का तिरस्कार कर रहे हैं जिसने हमें अपना पवित्र

आत्मा दिया है। परमेश्वर ने हमें हमारे बपतिस्मा के समय अपना **पवित्र आत्मा** हमें दिया है (प्रेरित 2:38) और फिर लगातार वह अपनी आत्मा को हमारे अंदर रहने देता है (1 कुरिंथियों 6:11, 18–20)। पौलुस इस बात की ओर संकेत कर रहा था कि जब पवित्र आत्मा हमारे अंदर है और उसके बाद भी हम पाप करते हैं तो यह बेतुका है। इसके बजाय हमें इस बात से अधिक सावधान रहना है कि कहीं हम "पवित्र आत्मा को शोकित" तो नहीं कर रहे हैं (इफिसियों 4:30)। क्या हम इस भयानक अनिश्चितता के दोषी हैं?

भाईचारे के प्रेम के लिए उपदेश (4:9-12)

9किन्तु भाईचारे की प्रीति के विषय में यह आवश्यक नहीं कि मैं तुम्हारे पास कुछ लिखूँ, क्योंकि आपस में प्रेम रखना तुम ने आप ही परमेश्वर से सीखा है; 10और सारे मकिदुनिया के सब भाइयों के साथ ऐसा करते भी हो। परन्तु हे भाइयो, हम तुम्हें समझाते हैं कि और भी बढ़ते जाओ, 11और जैसी हम ने तुम्हें आज्ञा दी है, वैसे ही चुपचाप रहने और अपना-अपना काम काज करने और अपने-अपने हाथों से कमाने का प्रयत्न करो; 12ताकि बाहरवालों से आदर प्राप्त करो, और तुम्हें किसी वस्तु की घटी न हो।

आयत 9. भाईचारे की प्रीति यूनानी शब्द φιλαδελφία (*फ़िलाडेल्फिया*) से आया है, जिसमें तुरंत ही फिलेडलफिया, "भाईचारे के प्रेम का शहर" से समानता प्रकट होती है। इस प्रकार के प्रेम को यूनानी भाषा में इसी प्रकार की अन्य भावनाओं से भिन्न दर्शाया गया है। यह वह भावना थी जो सामान्यतः कोई व्यक्ति अपने परिवार के लिए अनुभव करता था, ऐसी भावना जो सामान्यतः स्वाभाविक होती थी। इस प्रकार के प्रेम का तात्पर्य दूसरे के प्रति श्रद्धा होता है (रोमियों 12:10; इब्रानियों 13:1 से तुलना करें)। पौलुस ने कहा कि थिस्सलुनीकियों के लिए **आवश्यक नहीं** कि [वह] इस प्रेम के बारे में उन्हें **लिखे** क्योंकि इस विषय में उन्होंने इसे **आप ही परमेश्वर से सीखा है**। यहाँ पर इस पुष्टीकरण में "लिखने" शब्द पर ज़ोर प्रतीत होता है। उन्हें आवश्यकता नहीं थी कि वह उन्हें इस प्रेम के बारे "में लिखे," क्योंकि परमेश्वर ने पहले ही उन्हें इस विषय पर "मौखिक शिक्षा" दे दी थी। पौलुस प्रकटतः उनसे यह नहीं कह रहा था कि परमेश्वर ने सीधे उन पर अपने आप को प्रकट किया था। उसका अर्थ था कि परमेश्वर ने अप्रत्यक्ष रीति से उन्हें शिक्षा दी थी जब वह (पौलुस) थिस्सलुनीके में था और परमेश्वर की ओर से उन्हें सिखा रहा था। जब कोई ईश्वरीय प्रेरणा पाया हुआ व्यक्ति बोलता है, तो उसके वचन मनुष्यों के वचन नहीं, परन्तु परमेश्वर के वचन होते हैं (2:13)। पवित्र

शास्त्र की सही परिकल्पना ईश्वरीय प्रेरणा से दी गई शिक्षाओं तथा मनुष्यों द्वारा दी गई शिक्षाओं में भिन्नता करती है। धार्मिक जगत के कुछ लोग आजकल इस अनिवार्य भिन्नता को नहीं करते हैं। लियोन मौरिस का मानना था कि उनके अन्दर की पवित्र आत्मा ही उन्हें सीधे से सिखाती थी,[8] परन्तु यह प्रेरितों की सारी पत्रियों को अनावश्यक बना देगा।

आयत 10. पौलुस ने उनके प्रेम के बारे में तीमुथियुस से सुना (3:6)। **मकिदुनिया** वह प्रांत था जिसमें थिस्सलुनीके स्थित था, और इसमें फिलिप्पी एवं बीरिया के शहर भी थे, जिनमें पौलुस ने मण्डलियाँ स्थापित की थीं जिनसे थिस्सलुनीके के भाई संबंध बनाए रखते थे। यह ध्यान देने योग्य बात है कि थिस्सलुनीके के **सब भाइयों से** प्रेम रखते थे बिना धनी और निर्धन, शिक्षित और अशिक्षित या अन्य किसी प्रकार का भेदभाव किए (गलतियों 3:28 से तुलना करें)। यद्यपि यह सत्य था, फिर भी पौलुस का मानना था कि वह उन्हें **समझाए** कि वे **और भी अधिक** प्रेम करें, या भाइयों के लिए इस प्रेम में और बढ़ते जाएं। "आग्रह" पुनः παρακαλέω (*पाराकालेओ*) का रूप है। (3:7 पर चर्चा देखिए।)

आज हम अपने भाइयों से कितना प्रेम करते हैं? प्रेरित पौलुस के शब्द हमें प्रेरणा देते हैं कि हम "और अधिक" करें क्योंकि निश्चय ही हमने वैसा प्रेम नहीं किया है जैसा हमारा परमेश्वर पिता करता है, और हमारा आदर्श वही है (मत्ती 5:48)। यह भी ध्यान देना चाहिए कि प्रेम में "और अधिक श्रेष्ठ" होते जाने का यह उपदेश आयत 1 के "और अधिक श्रेष्ठ" होते जाने के समानन्तर है। पौलुस, पवित्र आत्मा की प्रेरणा से, चिन्तित था कि मसीही आत्मिक रीति से उन्नति करते जाएं। इसका अर्थ है कि हमें अपनी आत्मिक उन्नति के विषय चिन्तित रहना चाहिए।

आयत 11. इस आयत में प्रेरितों की शिक्षा की तीन बातों की थिस्सलुनीके के समाज को आवश्यकता थी। कुछ सांसारिक प्रमाण संकेत करते हैं कि थिस्सलुनीके के लोग अशान्त, आवेगशील, और सरलता से परेशान हो जाने वाले थे। यह चित्रण उनके द्वारा अपने काम छोड़कर παρουσία (*परुसिया*), अर्थात दूसरे आगमन की प्रतीक्षा करने के साथ भी मेल खाता है (जैसे 2 थिस्सलुनीकियों 3:1–15 में है)।

पहले, पौलुस ने कहा कि इस सांसारिक रीति के व्यवहार की तुलना में, उन्हें सर्वप्रथम [अपना] **चुपचाप रहने** का **प्रयत्न करना** चाहिए। मूल शब्दों का एक और अधिक वास्तविक अनुवाद है "शान्त रहने के लिए अथक प्रयास।" इसे NEB इस प्रकार कहती है कि उन्हें शान्त रहने के लिए संघर्ष करना चाहिए ना कि अपने आप को सदा परेशान स्थिति में बनाए रखें (देखें फिलिप्पियों 4:4–7)। दूसरे, उन्हें **अपना काम काज करने** के लिए कहा गया ("अपने काम

से काम रखो"; NIV) दूसरों के काम में अपनी नाक टांग अड़ाने के स्थान पर (1 पतरस 4:15 से तुलना करें)। तीसरा, यह जानते हुए कि जो व्यक्ति अपने काम से सरोकार रखता है उसके औरों के काम में अड़ंगा डालने की संभावना कम है, उसने उन्हें स्मरण दिलाया कि जब वह व्यक्तिगत रूप में उनके मध्य में था तो उन्हें यह **आज्ञा** दे चुका था कि [वे] **पने अपने हाथों से कमाने** का प्रयत्न करें। वह कह रहा था कि मसीहियों को अपनी जीविका कमाने में व्यस्त रहना चाहिए और कुछ अतिरिक्त कमा कर ज़रूरतमन्दों की सहायता करनी चाहिए। यदि वे अपने काम में ध्यान लगा रहे हैं, तो उनके सामने दूसरों के काम में अड़ंगा डालने का प्रलोभन नहीं रहेगा।

जैसा पहले ही ध्यान किया जा चुका है, पौलुस ने यह सत्य तब सिखाया था जब वह वहाँ था, परन्तु प्रत्यक्षतः उनमें से कुछ ने इसका पालन नहीं किया था। बाद में, हम देखते हैं कि उनमें से कुछ, पौलुस की शिक्षा का गलत अर्थ निकाल कर यह समझने लगे थे कि मसीह उन्हीं की पीढ़ी में वापस आने वाला है। इसलिए उन्होंने काम करना छोड़ दिया था और दूसरों के काम में बाधा डालने लगे थे, और निर्वाह के लिए दूसरों के ऊपर निर्भर रहने लगे थे (2 थिस्सलुनीकियों 3:6–12)। जीवन के प्रति यह दृष्टिकोण दो कारणों से गलत है। जब हम में अपनी देखभाल करने की क्षमता है तो दूसरों पर इसके लिए निर्भर होना गलत है (2 थिस्सलुनीकियों 3:10), और दूसरों के काम में अड़ंगा लगाना भी गलत है (2 थिस्सलुनीकियों 3:11)। हमें निरीक्षण करके दूसरों को प्रोत्साहित करना चाहिए कि मानवीय व्यवहार के इस आधारभूत नियम का पालन करें, व्यक्तिगत रीति से भी और मण्डली के रूप में भी। अवश्य ही यह तथ्य इस बात को नहीं नकारता है कि मसीहियों को निर्धनों, बीमारों, तथा अन्य ऐसे लोगों की जो अपनी सहायता नहीं कर सकते हैं सहायता करनी चाहिए (याकूब 2:14–17 से तुलना करें)।

आयत 12. मसीहियों को वर्णन की गई इस जीवनशैली को अपनाना चाहिए जिससे कि वे **बाहर वालों से आदर प्राप्त करो।** "सही रीति से" एक "पुराना क्रियाविशेषण है जो [εὐσχήμων] *युस्खेमोन* से आया है (*यू, स्खेमा,* लैटिन *हैबिटस*, मनोहर आकृति), शोभनीय, शालीन।"[9]

जब गैर-मसीही हमें सही व्यवहार करते हुए देखते हैं, तो हम उनके आदर के पात्र बनते हैं। जो व्यक्ति यह कहता है कि "मुझे परवाह नहीं कि लोग क्या सोचते हैं," उसमें मसीही आत्मा नहीं। पौलुस ने निश्चित रीति से दिखाया कि हमें ध्यान करना है कि लोग क्या सोचते हैं जिससे उनका आदर "जीत" सकें और अन्ततः उन में से कुछ को मसीह के लिए जीत लें। उसका दृढ़ निश्चय था "मैं सब मनुष्यों के लिये सब कुछ बना हूं, कि किसी न किसी रीति से कई एक का उद्धार कराऊं" (1 कुरिन्थियों 9:22)। मसीह तथा परिपक्व मसीहियों के

लिए इससे बढ़कर कुछ आवश्यक नहीं है कि लोगों को वापस परमेश्वर की ओर जीता जाए। सृष्टि के अधिकार से हर कोई परमेश्वर का है।

मसीहियों के काम करने (आयत 11) का एक और कारण है कि हमें **किसी वस्तु की घटी न** हो। (आयत 11 पर चर्चा देखें।)

मसीह के दूसरे आगमन से संबंधित शिक्षाएं (4:13–18)

13हे भाइयो, हम नहीं चाहते कि तुम उनके विषय में जो सोते हैं, अज्ञानी रहो; ऐसा न हो कि तुम दूसरों के समान शोक करो जिन्हें आशा नहीं। 14क्योंकि यदि हम विश्वास करते हैं कि यीशु मरा और जी भी उठा, तो वैसे ही परमेश्वर उन्हें भी जो यीशु में सो गए हैं, उसी के साथ ले आएगा। 15क्योंकि हम प्रभु के वचन के अनुसार तुम से यह कहते हैं कि हम जो जीवित हैं और प्रभु के आने तक बचे रहेंगे, सोए हुओं से कभी आगे न बढ़ेंगे। 16क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूँकी जाएगी; और जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे। 17तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे उनके साथ बादलों पर उठा लिये जाएँगे कि हवा में प्रभु से मिलें; और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे। 18इस प्रकार इन बातों से एक दूसरे को शान्ति दिया करो।

आयत 13. पौलुस उन पर "अनजान" (KJV) होने का आरोप नहीं लगा रहा था। इससे अच्छा अनुवाद **अज्ञानी** है। इसलिए वह इस पत्री के द्वारा उनके लिए आवश्यक जानकारी जुटाने का प्रयास कर रहा था - मसीह के दूसरे आगमन की जानकारी। विशिष्ट तौर से, पौलुस थिस्सलुनीके के लोगों की सहायता करने का प्रयास कर रहा था कि **जो सोते हैं** वे उनके बारे में समझ सकें। "सो जाना" मृत्यु व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त शब्द है।

उनके कुछ प्रिय जनों का देहांत हो गया था। वे ना केवल अपनी इस क्षति के कारण दुःखी थे, वरन मसीह के दूसरे आगमन से संबंधित उसकी शिक्षा के भाग को उन्होंने गलत समझा था। उन्होंने यह तो ठीक समझा था कि यह एक महान और महिमामय घटना होगी जिसमें विश्वासी मसीह के साथ सदैव रहने के लिए ले जाए जाएंगे। लेकिन उन्होंने यह गलत समझा था कि यह तुरंत होगा, इससे पहले कि उनमें से किसी का भी देहांत होता। अब इसके स्थान पर, पौलुस उनके पास से चला गया था, मसीह वापस नहीं आया था, और अब उनके कुछ प्रिय जनों का देहांत हो गया था। उन्हें भय था कि इन प्रिय जनों को मसीह के महिमामय पुनःआगमन में सम्मिलित होने के सौभाग्य से वंचित रहना पड़ेगा। इसलिए, उन प्रिय जनों के लिए वे घोर दुःख अनुभव कर रहे थे,

जैसा कि तीमुथियुस द्वारा पौलुस तक लाए गए समाचार से ज्ञात होता है (3:6)।

पौलुस ने उन से कहा कि **शोक** न करो। "शोकित," यूनानी शब्द λυπῆσθε (*लुपेस्थे*) से है, जो λυπέω (*लुपेओ*) का वर्तमान अधीन रूप है, ऐसा रूप जो "लगातार बने हुए दुःख" की ओर संकेत करता है। ऐसा दुःख उन दूसरे लोगों ही के लिए उपयुक्त है **जिन्हें आशा नहीं** है। उन अविश्वासियों, या "बाहरी" (4:12), लोगों के पास "कोई आशा नहीं" थी कि उन्हें पाप से अन्तिम छुटकारा मिल जाएगा और इसलिए उनके पास अनन्त जीवन की "कोई आशा नहीं" थी (रोमियों 8:21; इफिसियों 2:12 से तुलना करें)। इस वक्तव्य के द्वारा पौलुस ने हर प्रकार के दुःख या शोक के लिए मना नहीं किया। लेकिन, उस ने यह संकेत अवश्य किया, कि एक विश्वासी के लिए यह असंगत है कि वह "कोई आशा नहीं" होने के शोक में घुलता रहे। ऐसा शोक केवल अविश्वासियों के लिए संगत है।

आयत 14. क्योंकि यदि हम विश्वास करते हैं कि यीशु मरा और जी भी उठा यीशु के मारे जाने या पुनरुत्थान पर संदेह का संकेत नहीं करता, क्योंकि कभी "यदि," जैसे कि यहाँ पर, का अर्थ "क्योंकि" के समान होता है। वास्तव में, पौलुस ने कहा कि क्योंकि हम मसीह के मारे जाने और पुनरुत्थान में विश्वास रखते हैं, इसलिए हम उन मसीहियों के पुनरुत्थान में भी विश्वास रखते हैं जो अब **यीशु में सो गए** हैं। क्योंकि, जैसा उसने अन्य स्थान पर कहा है, मसीह पुनरुत्थान का केवल "प्रथम फल" है (1 कुरिन्थियों 15:23)। अभिव्यक्ति "प्रथम फल" का तात्पर्य है कि अन्य का भी पुनरुत्थान होगा, अर्थात, "जो मसीह के हैं" (1 कुरिन्थियों 15:23)।[10]

पौलुस ने कहा कि वे मसीही जो मसीह के समान जिलाए जाएंगे, **परमेश्वर** उनपर कार्य करेगा, और [इन जिलाए गए मसीहियों को] मसीह अपने **साथ ले आएगा**। कोई पूछ सकता है, "क्या वे 'उसके साथ तब होंगे' जब वह अपने दूसरे आगमन पर *वापस पृथ्वी पर आएगा*?" या "वे 'उसके साथ' तब होंगे जब वह *वापस स्वर्ग जाएगा*?" मौरिस का निष्कर्ष था कि मसीही मसीह के साथ जब वह पृथ्वी पर आएगा तब होंगे, अन्यथा, उसने तर्क दिया, वे *परुसिया* से बचे रह जाएंगे।[11]

पौलुस ने इस प्रश्न को 1 कुरिन्थियों 15:22–24 में संबोधित करते हुए कहा: "मसीह में सब जिलाए जाएंगे। परन्तु हर एक अपनी-अपनी बारी से; पहिला फल मसीह; फिर मसीह के आने पर उसके लोग। इस के बाद अन्त होगा; उस समय वह सारी प्रधानता और सारा अधिकार और सामर्थ्य का अन्त कर के राज्य को परमेश्वर पिता के हाथ में सौंप देगा ...।"

उसके साथ जिलाए जाना और "उसके साथ" *वापस स्वर्ग को जाना*

परुसिया में सम्मिलित होना है। इस दृष्टिकोण को समझना तब ही संभव है जब व्यक्ति यह समझे कि *परुसिया* का अर्थ केवल "आना" या "जाना" नहीं है, वरन इसमें उस महान "दिन" (देखें 5:2), में होने वाले कार्यों का समूह, जैसे कि पुनरुत्थान, स्वर्ग को वापसी, इत्यादि भी सम्मिलित है। वास्तव में, *परुसिया* का अर्थ है "विद्यमान" जिसके बाद कुछ प्रभाव आएंगे, जैसे कि पुनरुत्थान और न्याय।[12]

पौलुस ने 1 कुरिन्थियों में लिखा कि मसीह के जो लोग मर गए हैं वे "उसके आने पर ... जी उठेंगे" (1 कुरिन्थियों 15:22, 23)। कोई भी मरकर "उसके आने" से पहले "जिलाया" नहीं जाएगा जिससे कि वह उसके साथ पृथ्वी पर वापस आए। उसका आगमन सब बातों के "अन्त" से तुरंत पहले होगा, जब मसीह राज्य को पिता के हाथों में सौंप देगा। यह सब कहता है कि ये जिलाए गए संत मसीह "के साथ" लाए जाएंगे *वापस ऊपर स्वर्ग* की ओर उस महान दूसरे आगमन की घटना के भाग के रूप में। इस निष्कर्ष के समर्थन में यह भी है कि इस खण्ड में तुलना अविश्वासी और विश्वासी जो जीवित हैं उनके बीच नहीं है, जैसा कि "रैपचर" दृष्टिकोण के लिए आवश्यक है। वरन, यह उनके बीच है जो मसीह के आगमन से पहले विश्वास में मरे (जो "यीशु में सो गए") और वे विश्वासी जो थिस्सलुनीके में रह रहे थे।

1 थिस्सलुनीकियों 4:14 — बड़ा प्रश्न है:
"उसके साथ" कब?

↓ ↓ ↓	अ) रैप्चारिस्ट्स—"उसके साथ" वापस पृथ्वी पर आना एक अनुमानिक गुप्त (पूर्व) रैप्चर के बाद।	या	↑ ↑ ↑	ब) एडवर्ड्स (और अन्य)—"उसके साथ" आना इस तात्पर्य से की उसके साथ वापस स्वर्ग को आना उसके दूसरे आगमन में आने और उनके पुनरुत्थान करने के बाद।

तो यह 2 कुरिन्थियों 4:14, "क्योंकि हम जानते हैं, जिसने *प्रभु यीशु को जिलाया,* वही *हमें भी* यीशु में भागी जानकर *जिलाएगा,* और तुम्हारे साथ अपने सामने उपस्थित करेगा" के समानान्तर हो जाता है (जोर दिया गया)।

ध्यान करें: "यीशु के साथ" परन्तु
1) एक ही समय पर नहीं ("वह" भूतकाल / "हम" वर्तमान); वरन,
2) उसी दशा में (= जिलाए गए)।
साथ ही तुलना करें 1 कुरिन्थियों 6:14.

इस आयत के विषय जे. डब्ल्यू. मक्गार्वे और फिलिप वाए. पेन्डलटन ने लिखा:

> "उसके साथ" का यहाँ यह अर्थ *नहीं* है कि यीशु देहविच्छेदित आत्माओं को *स्वर्ग से* लेकर पुनरुत्थान के लिए लाएगा, वरन यह कि परमेश्वर, जो यीशु को *कब्र से निकालकर लाया,* वह यीशु के साथ उन्हें भी *कब्र से लाएगा,* जो उनके जीवनों में यीशु के साथ आत्मा के जुड़े हुए उसमें गए थे (ज़ोर दिया गया)।[13]

डेविड जे. विलियम्स ने भी कहा, "इस प्रकार विश्वासियों का पुनरुत्थान कोई पृथक घटना नहीं है, वरन वे यीशु के पुनरुत्थान में सहभागी हैं। वे 'यीशु के साथ' जिलाए जाएंगे।"[14] इस प्रकार व्याख्या करने से, खण्ड 2 कुरिन्थियों 4:14: "क्योंकि हम जानते हैं, जिसने प्रभु यीशु को जिलाया, वही हमें भी यीशु में भागी जानकर जिलाएगा, और तुम्हारे साथ अपने सामने उपस्थित करेगा" के बिलकुल समानान्तर हो जाता है।

इसलिए, आयत 14 समय के अन्त के पहले कुछ विश्वासी मसीहियों के किसी गुप्त रैप्चर (ले जाए या उठाए जाने) की अभिव्यक्ति नहीं करती, परन्तु समय के अन्त पर यह सभी मसीहियों के लिए बहुत सार्वजनिक एवं विदित होगा (देखिए आयत 17)।

आयत के अन्त की ओर प्रयुक्त वाक्यांश **यीशु में** के बारे में एक बार फिर से इस बात का ध्यान रखना भला होगा कि हम ने यीशु में होने का बपतिस्मा लिया है (रोमियों 6:3, 4)।

आयत 15. क्योंकि हम प्रभु के वचन के अनुसार तुम से यह कहते हैं का संकेत किसी ऐसी बात की ओर हो सकता है जो यीशु ने जब वे पृथ्वी पर थे तो व्यक्तिगत रीति से कही थी (1 कुरिन्थियों 7:10 से तुलना करें) या, जिसकी यहाँ अधिक संभावना है, उसकी ओर से अप्रत्यक्ष रूप से अपने प्रेरणा पाए हुए चेलों के द्वारा कही (2:13 पर चर्चा देखें)। मौरिस तथा औरों का मानना है कि यह यीशु के कुछ ऐसे कथनों का हवाला है जो सुसमाचारों में दर्ज नहीं किए गए, जैसे कि प्रेरितों 20:35।[15]

प्रभु के आने [*परुसिया*] का हवाला, जैसा ऊपर उल्लेख किया गया, उसके दूसरे आगमन से है (आयतें 16, 17; 1 कुरिन्थियों 15:22–24)। पौलुस ने थिस्सलुनीके के चिंतित विश्वासियों को आश्वस्त किया जो मसीही मसीह के "आने" **तक जो जीवित हैं और प्रभु के आने तक बचे रहेंगे** वे अपने उन प्रिय जनों से **आगे** नहीं बढ़ेंगे जो विश्वासी थे और जो "सो गए" हैं या जिनका देहांत हो गया है। "आगे बढ़ना" जो " [φθάνω] *फथानो* के द्वितीय सामान्य भूत का सक्रिय संभाव्य है" का अर्थ है "पहले आना।"[16]

"हम" के प्रयोग द्वारा क्या पौलुस के कहने का तात्पर्य था कि वह मसीह के दूसरे आगमन के समय तक जीवित होगा? ऐसा प्रतीत नहीं होता है। आई.

हॉवर्ड मार्शल ने सही कहा, "जो विद्वान इस बात पर ज़ोर देते हैं कि पौलुस के शब्दों का यही अर्थ है कि उसे *परुसिया* तक जीवित रहने की आशा थी, उसका गलत अर्थ निकालते हैं।"[17] अन्य स्थान पर पौलुस ने अपने आप को उनके साथ सम्मिलित किया जिन्हें परमेश्वर "जिलाएगा" (1 कुरिन्थियों 6:14; देखें 2 कुरिन्थियों 4:14)। परन्तु, दोनों ही स्थितियों में, वह बस अपने आप को उस समूह के साथ जोड़ता है जिस के बारे में वह उस समय बात कर रहा है, क्योंकि एक अन्य खण्ड में ऐसा लगता है कि उसे यह पता नहीं है कि मसीह की वापसी के समय वह "जाग रहा होगा या सोया होगा" (1 थिस्सलुनीकियों 5:1, 2, 10)। आयत 15 में पौलुस का मुख्य बिन्दु मसीह के आने का 'कब' नहीं है, वरन, यह कि वह जब भी आए, तब जो मसीही जीवित हैं वे उनसे अधिक लाभान्वित ना हों जिनका देहांत हो चुका है।[18]

आयत 16. जो मसीही जीवित हैं वे उनसे अधिक लाभान्वित क्यों नहीं होंगे जो आगे निकल चुके हैं? क्योंकि जब प्रभु आएगा, वह उन्हें जो **मसीह में मर गए हैं पहले जिलाएगा**। मृतक मसीही उस समय तुरंत जी उठेंगे जब **प्रभु स्वयं ... स्वर्ग से उतरेगा**।

उसके आने का संकेत एक **ललकार** होगी (κέλευσμα, *केलेउस्मा*), या "ऊँची आवाज़ में आज्ञा" होगी (NIV)।[19] संभवतः यह ललकार मसीह की उनके लिए पुकार है जो कब्रों में हैं (यूहन्ना 5:28 से तुलना कीजिए)। इसके अतिरिक्त, लोगों को **प्रधान दूत का शब्द** भी सुनाई देगा। यह दूत संभवतः जिब्राईल, जैसा कि सामान्यतः माना जाता है, नहीं है, परन्तु मिकाईल, जो एकमात्र वह दूत है जिसे बाइबल प्रधान स्वर्गदूत कहती है (यहूदा 9; प्रकाशितवाक्य 12:1–9)। प्रधान दूत का शब्द संभवतः अन्य स्वर्गदूतों के लिए आज्ञा होगी कि "उसके चुने हुओं को एकत्रित करें" (मत्ती 24:31)। प्रधान दूत की आवाज़ के साथ ही उसी क्षण, **परमेश्वर की तुरही** भी सुनाई देगी। इस "तुरही" को 1 कुरिन्थियों 15:52 में "अन्तिम तुरही" कहा गया है। यह "परमेश्वर की" तुरही है क्योंकि यह "परमेश्वर के," या मसीह जो ईश्वरीय है के आगमन की घोषणा करती है। इसी "तुरही" ने इस्राएलियों को सिनै पर्वत पर अपने परमेश्वर से मिलने के लिए बुलाया था (निर्गमन 19:17–19)। मानव जाति के इतिहास में तुरही को बहुधा लोगों को "जगाने" के लिए प्रयोग किया गया है। यहाँ, यह विश्वासियों को मृत्यु की "निद्रा" से जागृत करने के लिए है।

इस खण्ड में, पौलुस ने केवल आज्ञाकारियों के पुनरुत्थान की चर्चा की है क्योंकि केवल यही बात उसके उद्देश्य को पूरा करती है। लेकिन, यह स्पष्ट है कि अनाज्ञाकारियों का पुनरुत्थान भी उसी समय होगा, जैसे कि पौलुस और मसीह ने अन्य स्थान पर पवित्रशास्त्र में सिखाया है (प्रेरितों 24:15; यूहन्ना 5:28, 29)। थिस्सलुनीकियों के लिए मुख्य शिक्षा थी कि परमेश्वर उनके प्रिय

मृतकों की अवहेलना नहीं करेगा। वे "पहले" जिलाए जाएंगे।

आयत 17. जो आज्ञाकारी प्रभु के आगमन के समय जीवित होंगे, पौलुस कहता है कि वे **उनके साथ बादलों पर उठा लिये जाएँगे** [ἁρπάζω, *हारपाज़ो*]। यहाँ "उनके" जिनके साथ जीवते उठाए जाएंगे वे मृतक प्रिय जन हैं जो कि, जैसा आयत 14 की चर्चा में दिखाया गया, मसीह के दूसरे आगमन पर तुरंत जिलाए जाएंगे। (नीचे चार्ट देखें "'रैप्चरिंग' पवित्रशास्त्र में - 1 थिस्सलुनीकियों 4:17: 'उठाए गए'")। "वे" और "हम" दोनों ही **हवा में प्रभु से मिलने** के लिए उठाए जाएंगे। "हवा में" संभवतः शैतान पर, जिसे पौलुस "आकाश के अधिकार का हाकिम" (इफिसियों 2:2) कहता है, पर प्रभु की संपूर्ण विजय पर ज़ोर देता है। मसीह के दूसरे आगमन पर, उसके राज्य का विस्तार "हवा" पर भी होगा, जो शैतान की संपूर्ण हार का सूचक है।

"रैप्चरिंग" पवित्रशास्त्र में 1 थिस्सलुनीकियों 4:17: "उठाए गए"	
नहीं है:	*है:*
यीशु के अदृश्य आगमन पर *कुछ* विश्वासियों का *गुप्त* रैप्चर उसके अंतिम आगमन के वर्षों पहले जिससे वे उसके साथ लौट सकें।	सभी विश्वासियों का अति प्रगट रैप्चर समय के अन्त पर जब वे "उसके साथ" जाएंगे जब वह स्वर्ग में जाएगा।

यह खण्ड इस धारणा को ध्वस्त कर देता है कि यीशु कभी यहाँ पृथ्वी पर हज़ार-वर्ष का भौतिक राज्य स्थापित करेगा। पवित्रशास्त्र में ऐसा कुछ भी नहीं है जो यह संकेत दे कि वह पृथ्वी पर फिर कभी कदम रखेगा। इसके विपरीत, वह पृथ्वी पर "आएगा" और उस समय वह पृथ्वी के वायु-मण्डल में रहेगा और उसके विश्वासियों को पृथ्वी पर से उठवा लेगा कि उसके साथ **सदा** या "सदा के लिए" (NIV) स्वर्ग में रहें। मौरिस ने यहाँ एक गुप्त रैप्चर का विरोध किया, यह कह कर कि, "यहाँ गुप्त रैप्चर को घुसाना बहुत कठिन है।"[20] अन्य स्थान पर (1 कुरिन्थियों 15:48–52), पौलुस ने हमें कहा कि "परमेश्वर के राज्य का अधिकारी" होने के लिए, हम "अविनाशी," माँस और लहू रहित दशा में "बदल" जाएंगे।

आयत 18. पौलुस की **इन बातों** को थिस्सलुनीकियों के लिए उपयोगी होना था जिससे वे अपने दिवंगत प्रिय जनों के लिए **एक दूसरे को शान्ति दे** सकें। उसने कहा, वे दिवंगत प्रिय जन, दूसरे आगमन की महान घटना से बचे

नहीं रहेंगे। फिर से, "शान्ति" के लिए प्रयुक्त शब्द से है, जिसका अर्थ होता है "प्रोत्साहित करना, शान्ति, सांत्वना" (देखें 3:7)।

अनुप्रयोग

इस बिन्दु पर आकर, पौलुस अपनी पत्री के अधिक व्यावहारिक भाग की ओर मुड़ता है। वह थिस्सलुनीकियों के लिए आवश्यक सैद्धांतिक बातों का निवारण कर चुका था, और अब यहाँ वह उनके समक्ष उनके कर्तव्यों को लेकर आ रहा था। वह सिद्धांत से कर्तव्य तक, निर्देश से व्यवहार तक पहुँच गया था।

मसीहियों को कैसी "चाल चलनी चाहिए" (4:1, 2)

यीशु का लौटना, उसका दोबारा आना, 1 थिस्सलुनीकियों का बहुत महत्वपूर्ण भाग है। यीशु कलीसिया का दूल्हा है (2 कुरिन्थियों 11:2), और वह उसे अपने लिए ले जाने के लिए दोबारा आ रहा है (यूहन्ना 14:3)। कलीसिया उसके साथ एक बड़े भोज में, जिसे "मेमने के विवाह का भोज" (प्रकाशितवाक्य 19:9) कहा गया है, सहभागी होगी। हम जब तक पृथक हैं, तो क्या हम मसीह द्वारा हमारे जीवनों के लिए बनाई गई योजना का पालन कर रहे हैं?

उसके लौट के आने तक हमें कैसे चलना और जीना चाहिए? अध्याय 4 में, पौलुस ने कहा, "... तुम ने हम से योग्य चाल चलना और परमेश्वर को प्रसन्न करना सीखा है" (आयत 1)। "चलने" का चित्रण मसीही के जीवन की तुलना तीर्थयात्रा से करता है (देखें 2:12)। यीशु ने इसके समान चित्रण का उपयोग किया जब उसने कहा, "... संकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है" (मत्ती 7:14)।

पौलुस के अनुसार, एक मसीही की चाल "परमेश्वर को प्रसन्न" करने तथा "आज्ञाओं" का पालन करने वाली होनी चाहिए (आयतें 1, 2)। हमें परमेश्वर की सेवा करनी है, प्रभु यीशु हमारे दूल्हे के अध्यादेशों का पालन करना है। EE

विश्वास में बने रहना (4:1, 2)

प्रेरित ने स्पष्ट संकेत किया कि वह अपनी पत्री के व्यावहारिक भाग की ओर आ रहा है, जब उसने शब्द "अन्त में" तथा "फिर" का प्रयोग किया, शब्द जिनका अर्थ निष्कर्ष नहीं वरन "शेष" है। उसने कोमलता के साथ थिस्सलुनीकियों को भाई कहकर संबोधित किया, और उनसे आग्रह किया कि प्रभु में तथा उसके द्वारा जिस सन्देश को उन्होंने ग्रहण किया था उसे जी कर दिखाएं। उसका आग्रह दिखाता है कि, तब और अब, नए परिवर्तित लोगों को

कैसे जीना चाहिए।

उन्हें जो मिला है उसमें चलना चाहिए। पौलुस, तीमुथियुस, और सीलास ने थिस्सलुनीकियों को सुसमाचार और उसके तात्पर्य सिखाए थे। उन्हें सिखाया गया कि कैसे जीना है। शब्द "चाल" जीवन के लिए रूपक अलंकार है। मसीही जीवन सीढ़ी नहीं, परन्तु चलना है। यह संक्षिप्त, समयानुसार विशिष्ट घटना नहीं, परन्तु लगातार, अविरल विश्वास का जीवन है।

उन्हें मसीह की शिक्षाओं में श्रेष्ठ होना है। मसीही उस ही पठार पर बना नहीं रहता है, अपितु वह विश्वास में बढ़ता है, मसीह की शिक्षाओं के अनुसार अधिकाधिक जीते हुए और आत्मिकता में परिपक्व होते हुए।

उन्हें जो सौंपा गया है उसकी रखवाली करनी है। पौलुस ने उन्हें सौंपा, उनके हृदयों पर रखा कि वे सुसमाचार के सन्देश के प्रति विश्वासयोग्य रहें। उन्हें थिस्सलुनीकेया में प्रभु की कलीसिया होने के लिए नियुक्त किया गया था।

इन नए परिवर्तित लोगों के लिए उसकी चेतावनी तीन शब्दों के चारों ओर घूमती है" "चलो," "बढ़ो," और "रखो।" उसने मसीही के उत्तरदायित्व को संक्षिप्त परन्तु व्यावहारिक रूप में संजोया है। EC

व्यभिचार (4:3–8)

इन शब्दों में जैसे पौलुस सामान्य से विशेष की ओर बढ़ा, विषय सैद्धांतिक सन्देश से मसीही पवित्रता की ओर खिसक गया। अन्यजातियों में प्रचलित एक पाप था व्यभिचार। परंपरागत और कामुक दोनों ही प्रकार के व्यभिचार उनके पिछली जीवन शैली का भाग थे। इसलिए, उसके लिए आवश्यक था कि वह उनके सामने रखे कि व्यभिचार क्यों गलत है और मसीही को इसमें जुड़ना नहीं चाहिए।

यह परमेश्वर की इच्छा है कि व्यभिचार से बचें (आयत 3)। यह पवित्र शास्त्र के उन भागों में से एक है जहाँ हमें परमेश्वर की इच्छा के बारे में सीधा कथन दिया गया है। हम पूछते हैं, "परमेश्वर की आज्ञा क्या है?" सार में, पौलुस हमें बताता है, "आप निश्चित हो सकते हो कि परमेश्वर नहीं चाहता है कि हम व्यभिचार करें।"

यह दूसरों से चोरी करता या धोखा देता है (आयत 6)। व्यभिचार उस मूल सच्चाई को नष्ट कर देता है जो प्रत्येक मसीही में होनी चाहिए। यह इसमें संलग्न प्रत्येक व्यक्ति से उस शुद्धता को चुरा लेता है जो उसके साथी का अधिकार है।

यह परमेश्वर द्वारा दण्डित होगा (आयत 6)। परमेश्वर बुराई का पलटा लेनेहारा है। वह निश्चित करेगा कि प्रत्येक पाप का - ना केवल व्यभिचार का – पूरा-पूरा पलटा लिया जाए। कोई पाप उसकी सर्वदर्शी आँखों से छिप नहीं

सकता है।

व्यभिचार पवित्र आत्मा के विरुद्ध पाप है (आयत 8)। प्रत्येक मसीही, पौलुस के अनुसार, परमेश्वर के पवित्र आत्मा का भौतिक निवास स्थान है (1 कुरिन्थियों 6:19, 20)। क्योंकि एक मसीही परमेश्वर का मन्दिर है, इसलिए यह सोचने से परे है कि कोई परमेश्वर के पवित्र आत्मा के निवास स्थान को लेकर उसे व्यभिचार द्वारा दूषित कर दे।

जब कोई व्यभिचार ना करने के इन कारणों पर विचार करता है, तो उसे दिख पड़ता है कि व्यभिचार कितना दुखान्त है। किसी मसीही को इसका बचाव नहीं करना चाहिए, इसमें जुड़ना नहीं चाहिए, और ना ही लालसा के साथ इस पर मनन करना चाहिए। EC

पवित्रता में चलो (4:3–8)

पौलुस ने लिखा, "क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है कि तुम पवित्र बनो" (आयत 3)। मसीही चाल के आरंभ करने के समय मसीहियों के पाप "धो दिए गए" (प्रेरितों 22:16), और अपनी मसीही चाल के दौरान जब वे पश्चाताप करते हैं, उनके पाप क्षमा किए जाते हैं (1 यूहन्ना 1:7–10)। पौलुस ने थिस्सलुनीकियों को समझाया कि व्यभिचार के प्रलोभन के समय में उन्हें पवित्रता के जीवन की चाल कैसे चलनी है।

"व्यभिचार से बचे रहो" (आयत 3)। इसका खतरा अन्यजाति मूर्तिपूजक शहरों में, जहाँ वेश्यावृति फूलती-फलती थी, सदा रहता था।

"तुम में से हर एक पवित्रता और आदर के साथ [अपने] पात्र को प्राप्त करना जाने" (आयत 4)। "पात्र" का अर्थ विवादास्पद है। इसका अर्थ RSV "पत्नी" लगाती है ("अपने लिए पत्नी ले")। लेकिन बाइबल में किसी भी अन्य स्थान पर पत्नी का इस प्रकार से हवाला नहीं दिया गया है। "पात्र" का एक अधिक संभावित अर्थ है "शरीर" (NIV)। इसे सकारात्मक रूप से कहा जाए तो, मसीहियों को अपने शरीरों पर "पवित्रता और आदर के साथ" नियंत्रण रखना है (आयत 4; देखें रोमियों 6:19)। इसे नकारात्मक रूप में देखें तो, मसीहियों को अपने शरीरों को "काम अभिलाषा" के साथ नहीं जोड़ना है (आयत 5)।

शरीर की अभिलाषाओं के नियंत्रण के विषय में "कोई अपने भाई को न ठगे, और न उस पर दाँव चलाए" (आयत 6अ)। अपने भाई को ठगना दूसरे के जीवन साथी के साथ व्यभिचार करने के रूप में हो सकता है। अपने भाई को ठगना किसी अविवाहित के साथ अवैध यौन संबंध रखने से हो सकता है, जिसके द्वारा भविष्य के उसके वैवाहिक साथी को ठगा जाए।

यह बोध रखना कि "प्रभु इन सब बातों का पलटा लेनेवाला है" (आयत

6ब)। यहाँ "पलटा लेनेवाला" जैसे प्रयुक्त हुआ है, यह वह नहीं है जो हिसाब बराबर कर लेता है, वरन वह जो न्याय चुकाता है। पौलुस ने थिस्सलुनीकियों को इसके बारे में चिताया था जब वह उनके साथ था, और वह इसे गंभीर मुद्दा मानता था। "क्योंकि परमेश्वर ने हमें अशुद्ध होने के लिये नहीं, परन्तु पवित्र होने के लिये बुलाया है" (आयत 7)।

स्मरण रखें कि "जो इसे तुच्छ जानता है, वह मनुष्य को नहीं परन्तु परमेश्वर को तुच्छ जानता है"(आयत 8अ)। परमेश्वर हमारा रचयिता है। वही है जो बपतिस्मा के समय "अपना पवित्र आत्मा देता है" (आयत 8ब; देखें प्रेरितों 2:38; 5:32), और अपनी आत्मा को सदैव हमारे अन्दर बने रहने देता है (1 कुरिन्थियों 6:19, 20)। पवित्र आत्मा पा लेने का दावा करना और अपवित्रता का जीवन व्यतीत करना परस्पर विरोधी बातें हैं। ऐसा आचरण "पवित्र आत्मा को शोकित करता है" (इफिसियों 4:30) और पिता तथा दूल्हे को अप्रसन्न करता है।

मसीही चाल चलने के लिए, हमें ऐसी अशुद्धताओं को त्यागना है। हमारा दूल्हा चाहता है कि हम सभी यौन अनैतिकता को; तथा विवाह से बाहर के यौन संबंधों और अविवाहित व्यक्तियों में ऐसे परस्पर व्यवहार को जो कामुकता जागृत करता है, त्याग दें। EE

हमारे जीवनों में परमेश्वर की इच्छा (4:1–8)

परमेश्वर के वचन के द्वारा हमारे पास अवसर है कि हम परमेश्वर के मन में झांकें, परमेश्वर क्या चाहता है जान लें। हम हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर जो चाहता है उसके दृष्टिकोण को पा सकते हैं।

पत्री के इस भाग से पूर्व के तीन अध्यायों में दिए आनन्दपूर्ण समाचार में, पौलुस ने थिस्सलुनीकियों के बीच हुए सुसमाचार प्रचार को और जो मसीही हो गए थे उनके द्वारा उत्सुकता के साथ उसे ग्रहण करने को स्मरण किया। सताव में भी विश्वास तथा प्रेम की बढ़ोतरी का समय रहा था। इन नए मसीहियों की उन्नति उनके शिक्षकों के लिए बड़े आनन्द और सांत्वना का कारण थी। बढ़ोतरी के इस समय को स्मरण करने के बाद, पौलुस उन कुछ महत्वपूर्ण सिद्धांतों और आचरण के बारे में चर्चा करने लगा जिनकी इन युवा मसीहियों को अपनी उन्नति बनाए रखने के लिए आवश्यकता थी।

जीवन में शुद्धता मसीही उन्नति का महत्वपूर्ण भाग है, और यह मसीही जिस परमेश्वर की आराधना करते थे उसे प्रतिबिंबित करने के लिए शुद्धता की आवश्यकता थी। उस मूर्तिपूजक अन्यजाति समाज में, लोगों के जीवन उन ईश्वरों की इच्छाओं को दिखाते थे जिनमें वे विश्वास करते और जिनकी आराधना करते थे। यदि समाज के अन्यजातियों को सच्चे परमेश्वर के बारे में

सीखना था, तो मसीहियों के जीवन से उन्हें परमेश्वर की पवित्रता का सच्चा चित्र प्राप्त होना था।

परमेश्वर के कार्य के खोजी हों (4:1)। पौलुस ने पाठकों से "निवेदन और आग्रह" या विनती करना आरंभ किया। ये शब्द विशेष निवेदन की ओर ध्यान ले जाते हैं, तथा बहुधा किसी पत्री के मुख्य उद्देश्य की ओर संकेत करते हैं।

पौलुस कलीसिया से क्या करने के लिए कह रहा था? वे परमेश्वर के साथ चलने और उसे प्रसन्न करने में "और भी बढ़ते" जाएं। क्या इसका यह अर्थ है कि वे अच्छा नहीं कर पा रहे थे? कदापि नहीं! उन से इस आयत में कहा गया कि वे पहले ही श्रेष्ठ कर रहे थे। इस पत्री में अनेकों बार पौलुस ने इन मसीहियों से कहा कि जिस काम को वे पहले से ही अच्छे से कर रहे थे उसे और श्रेष्ठता से करें। उसने 4:9, 10, में प्रेम करने के लिए उनकी सराहना की, परन्तु कहा कि वे और अधिक करें; उसने 5:11 में उन्हें एक दूसरे को प्रोत्साहित करने तथा उन्नति करने को कहा, जैसा वे कर रहे थे।

थिस्सलुनीकेया के मसीहियों का धन्यवाद करने और उनकी सराहना करने के पश्चात, पौलुस ने पत्री का शेष भाग उन्हें परमेश्वर के साथ चलने की उनकी सेवकाई को और भी अधिक करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए लिखा।

उन्हें अपने जीवनों में कैसी चाल चलनी थी? परमेश्वर को प्रसन्न करने वाली! इफिसियों की मण्डली से कहा गया "परखो, कि प्रभु को क्या भाता है" (इफिसियों 5:10)। हमारा ध्येय भी यही होना चाहिए।

परमेश्वर की आज्ञाओं को स्मरण रखें (4:2)। थिस्सलुनीकेया के मसीहियों से कहा गया कि जो उन्हें सिखाया गया था वे उसे स्मरण रखें। इस अध्याय में हम आगे चलकर देखेंगे कि वह क्या था, परन्तु मुख्य निर्देश था कि जो शिक्षा उन्हें दी गई थी उसे ना भूलें (4:2)।

कितनी बार जो हम जानते हैं उसे अनदेखा कर देते हैं! हमारे पास ऐसा करने के अनेकों कारण हो सकते हैं। हो सकता है कि शिक्षा समझने में कठिन हो; हो सकता है कि हम उसे ग्रहण करना ना चाह रहे हों; हो सकता है कि हमें लगे कि इसकी हमें आवश्यकता नहीं है; या हो सकता है कि उसे आचरण में ढालने के लिए हम आलस करें। हम कभी-कभी सोचते हैं कि सत्य को जानना ही उस सत्य का संपूर्ण व्यावहारिक उपयोग है।

कारण जो भी हो, परमेश्वर के वचन से बहुमूल्य शिक्षा प्राप्त कर के फिर उसे एक किनारे रख देना और उसका पालन ना करना कैसा व्यर्थ करने वाला है! यदि ऐसा होता है तो शिक्षकों को हमें हमारे निर्देशों को स्मरण रखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए और पुनः आवृत्ति करनी चाहिए जिससे हम उनके अनुसार जीवन व्यतीत कर सकें। हमें परमेश्वर की कही बातों को सदा स्मरण रखना चाहिए - और उनका पालन करना चाहिए!

व्यभिचार से बचे रहो (4:3)। आयत 3 का केंद्रबिन्दु "पवित्रता" तथा "यौन दुराचार" में तुलना है। पवित्र किया गया व्यक्ति परमेश्वर के कार्य के लिए आरक्षित किया गया है, जिससे परमेश्वर प्रसन्न होता है वही करे। पवित्रता की व्याख्या पृथक किया जाना या विशेष प्रयोजन के लिए आरक्षित किया जाना है। वह जिसे परमेश्वर के उपयोग के लिए पृथक किया गया है बाइबल उसे "पवित्र" कहती है। क्योंकि परमेश्वर के लोग परमेश्वर के अनुसार उपयोगी होने के लिए पृथक किए गए हैं, वे पवित्र जन, या "संत" हैं। नए नियम में "पवित्रीकरण," "संत," और "पवित्र" के लिए प्रयुक्त शब्द एक ही मूल यूनानी शब्द से आते हैं और वे एक ही विचार के लिए हैं।

हम भिन्न वस्तुओं के विशिष्ट उपयोग करने के आदी हैं। मेज़पोश को मेज़ पर ही बिछाया जाना चाहिए; हम उसे फर्श साफ करने या अपने जूते चमकाने के लिए प्रयोग नहीं करते हैं। इसी प्रकार परमेश्वर भी हमें उस ही के द्वारा निर्धारित विशेष उपयोग के लिए रखना चाहता है। हमारे यौन जीवन भी विशेष उपयोग के लिए आरक्षित हैं - विवाह में।

कुछ लोगों का विचार है कि यौन संबंध अपने आप में गलत हैं, इसलिए वे सिखाते हैं कि अकेला रहना अधिक पवित्र रहना है। इसीलिए वे विवाह को सब के लिए या कुछ के लिए वर्जित मानते हैं। परमेश्वर का वचन सिखाता है कि विश्वास से हटने का एक चिन्ह होगा कि लोग "विवाह करने से रोकेंगे" (1 तीमुथियुस 4:1–3)। परमेश्वर की शिक्षा है कि "विवाह सब में आदर की बात समझी जाए, और बिछौना निष्कलंक रहे; क्योंकि परमेश्वर व्यभिचारियों, और परस्त्रीगामियों का न्याय करेगा" (इब्रानियों 13:4)। यौन संबंध मूल्यवान हैं और परमेश्वर द्वारा विवाह में सम्मानित हैं। जब हम यौन गतिविधियों को विवाह में सीमित रखते हैं, हम परमेश्वर की जीवन शैली को समर्पित रहते हैं।

पवित्र होना सीखें (4:4)। अपने शरीरों को सही रीति से सही कार्य के लिए उपयोग करना "स्वाभाविक" क्रिया नहीं है। हमें ऐसा करना सीखना होता है (4:4)।

यदि हम अपने शरीरों को परमेश्वर को आदर देने योग्य कार्य के लिए पृथक रखना चाहते हैं, तो जो परमेश्वर चाहता है हमें वह करने का अभ्यास करना होगा। कुछ लोग अपनी यौन गतिविधियों को अपनी इच्छा के अनुसार, दूसरों की गतिविधियों के अनुसार, या फिर समाज के रवैये के अनुसार संचालित करना चाहते हैं। यदि हम बस वही करें जो हम करना चाहते हैं, या दूसरों के उदाहरणों का अनुसरण करें, तो अन्ततः हम परमेश्वर के मार्गों के विमुख चलने लगेंगे। हमें उसी का अनुसरण करना है जो परमेश्वर चाहता है, चाहे इसके लिए हमें अपनी लालसाओं को वश में रखना या बदलना ही क्यों ना पड़े, और चाहे यह दूसरों के आचरण या स्वीकृति के विरुद्ध ही क्यों ना हो।

कामुकता से बचे रहें (4:5)। वह क्या है जो लोगों को विधर्मी यौन गतिविधियों में सम्मिलित कर देता है? यह वह लालसा है जिसे बाइबल "कामुकता" कहती है। इसका तात्पर्य प्रबल यौन प्रवृत्तियों से है। यदि ये किसी व्यक्ति के कार्यों को संचालित करने वाली बन जाती हैं, तो फिर वह व्यक्ति उन लालसाओं का अनुसरण करेगा, ना कि परमेश्वर की इच्छा का (4:5)। अन्यजाति लोग अपनी कामुकता को संतुष्ट करने के लिए अपने आप को यौन गतिविधियों में लगाए रखते थे। उन्होंने इसे अपनी उपासना का एक भाग बना लिया था और मन्दिरों में वेश्याओं को रखा जाता था। ये अन्यजाति मूर्तिपूजक अपने देवताओं को अपने ही समान समझते थे; वे उन्हें प्राणियों के एक ऐसे समूह जैसा देखते थे जो उनके ही समान लड़ते थे, प्रेम में पड़ते थे, और एक दूसरे को मनुष्यों के समान ही धोखे देते थे। वे सोचते थे कि देवताओं की गतिविधियों का अनुकरण करने से, वे उन्हें प्रसन्न कर रहे हैं।

जब ये थिस्सलुनीके "मूरतों से परमेश्वर की ओर फिरे ताकि जीवित और सच्चे परमेश्वर की सेवा करें" (1:9), तो उन्हें सीखना पड़ा कि परमेश्वर क्या चाहता है और उस के अनुसार अपनी यौन लालसाओं को नियंत्रित करना सीखना पड़ा। यदि हमें परमेश्वर के उपासक होना है, तो हमें हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर की इच्छा का अभ्यास करना होगा।

यौन लालसाओं को कैसे नियंत्रित किया जा सकता है? पौलुस ने जवान प्रचारक तीमुथियुस से कहा कि एक व्यक्ति "आदर का बरतन, और पवित्र ठहरेगा; और स्वामी के काम आएगा, और हर भले काम के लिये तैयार होगा" (2 तीमुथियुस 2:21)। उसने उससे आग्रह किया "जवानी की अभिलाषाओं से भाग; और जो शुद्ध मन से प्रभु का नाम लेते हैं, उन के साथ धर्म, और विश्वास, और प्रेम, और मेल-मिलाप का पीछा कर" (2 तीमुथियुस 2:22)।

इन आयतों में विधर्मी यौन फंदों से बचने के लिए कुछ बहुमूल्य विचार हैं: (1) हमें पहचानना होगा कि हम सम्मानित, पवित्र और परमेश्वर की सेवकाई में उपयोगी हो सकते हैं और वैसा जीवन जीने के लिए दृढ़ संकल्प होना होगा। (2) हमें उन परिस्थितियों से "भागना" होगा जिनमें हम जवानी की अभिलाषाओं द्वारा नियंत्रित हो सकते हैं। (3) हमें उन गतिविधियों का भाग बनना होगा जिन से धार्मिकता, विश्वास, प्रेम, और शांति विकसित होती हैं। (4) हमें इन हितकर गतिविधियों में उन लोगों के साथ संलग्न होना होगा जो परमेश्वर की सेवा निष्ठा और शुद्ध हृदयों से करना चाहते हैं।

दूसरों को धोखा ना दें (4:6)। जब कोई अपने आप को यौन अनैतिकता के साथ जोड़ता है, तो वह परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध जाता है - और वह किसी दूसरे व्यक्ति के साथ भी गलत और धोखा करता है (आयत 6)। वह दूसरों का अनुचित लाभ लेता है। कुछ का दावा है कि वयस्कों के बीच सहमति से किए

गए यौन व्यवहार - जिन्हें बाइबल व्यभिचार, परस्त्रीगमन, समलैंगिकता कहती है - सही हैं, क्योंकि हत्या या चोरी के समान, ये दूसरे व्यक्ति की इच्छा के विरुद्ध नहीं होते हैं।

परमेश्वर के वचन के अनुसार, इन पापों के कारण औरों को दुःख उठाना पड़ता है। ये प्रकटतः किसी के विवेक को हानि पहुँचा सकते हैं, अपने परिवार के साथ उसके संबंधों की हानि कर सकते हैं, और परमेश्वर के साथ उसके संबंधों की हानि कर सकते हैं। ये दुष्प्रभाव बहुत गंभीर हो सकते हैं और कई वर्षों तक बने रह सकते हैं - संभवतः जीवन भर।

कुछ लोग सोचते हैं कि विवाह से पहले जाँचने के लिए कुछ समय तक यौन साझीदार बन कर रहने से जोड़े को अवसर मिलता है कि देखें कि वे परस्पर अनुकूल हैं कि नहीं। वास्तव में यह परमेश्वर अथवा अपने संगी के प्रति बिना कोई प्रतिबद्धता रखे यौन संबंधों की सहमति देता है और संबंधों को अस्थिर करता है। यह उस स्थिर, प्रतिबद्ध, परमेश्वर द्वारा अनुमोदित संबंध की तीव्र तुलना में है। पाप सदैव दूसरों की हानि करता है। आयत 6 सिखाती है कि इस प्रकार दूसरों के जीवनों की हानि करने के लिए परमेश्वर हमें उत्तरदायी ठहराएगा।

कुछ का दावा है कि विवाह पति और पत्नी के जीवनों में कठिनाइयाँ लाता है, इसलिए विवाह की वचनबद्धता में नहीं पड़ना ही भला है। ये ही तर्क थिस्सलुनीके के लोगों द्वारा भी प्रयुक्त हुए होंगे जब वे मसीही होने के बारे में विचार कर रहे थे, यह जानते हुए कि उनके परिवर्तन से विरोध आएगा, जैसा कि सुसमाचार प्रचार से हुआ था (1:6; 2:14–16)।

इस कारण प्रश्न यह नहीं है कि "क्या इस कार्य से कोई कठिनाई या समस्या होगी?" वरन यह कि "क्या यह वह कार्य है जो परमेश्वर चाहता है?" यदि यह वह है जो परमेश्वर चाहता है, तो हमें इसे करना है - परिणाम चाहे जो भी हो - यह जानते हुए कि विजयी होने या परिणाम सहने के लिए परमेश्वर हमारी सहायता करेगा। हम जानते हैं "कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है ..." (रोमियों 8:28)।

परमेश्वर के पक्ष में होने का निर्णय लें (4:7, 8)। परमेश्वर ने हमें किसी कारण से बुलाया है। परमेश्वर हमें कैसे बुलाता है? यीशु के सुसमाचार के शुभ सन्देश के द्वारा। पौलुस ने लिखा, "... उसने तुम्हें हमारे सुसमाचार के द्वारा बुलाया, कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा को प्राप्त करो" (2 थिस्सलुनीकियों 2:14)। जब सुसमाचार का प्रचार होता है, परमेश्वर लोगों को अपने पास बुला रहा है क्योंकि वह उनके साथ अपनी महिमा मसीह में होकर बाँटना चाहता है। क्योंकि परमेश्वर लोगों को सुसमाचार के द्वारा बुलाता है, इसलिए हम जान सकते हैं कि वह उन्हें शकुनों, दर्शनों, या चिन्हों

के द्वारा नहीं बुलाता है। सुसमाचार का कोई विकल्प है ही नहीं।

परमेश्वर ने हमें हमारी भलाई के लिए बुलाया है। हम सोच सकते हैं कि परमेश्वर की सारी योजनाएं, जैसे वह चाहता है, सब उसी प्रकार होती हैं, और हमें बस उनमें किसी प्रकार अपना समावेश करना है - चाहे उससे हमारा भला हो अथवा नहीं।

यद्यपि यह सत्य है कि परमेश्वर ने योजनाएं बनाई हैं, उसने वे हमारी भलाई ही के लिए बनाई हैं क्योंकि वह हमारे लिए सर्वोत्तम चाहता है। इससे पहले कि हम उसके प्रति कोई प्रतिक्रिया देते, परमेश्वर ने हमें कई आशीषें दी हैं, और वह चाहता है कि हम सदा के लिए उसके मित्र हो जाएं। "जिसने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिये दे दिया: वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्योंकर न देगा?" (रोमियों 8:32)। हमारा उद्धार परमेश्वर की सेवा करते रहने से है। हम निश्चित कह सकते हैं कि जो वह हम से चाहता है वह हमारे भले के लिए है; हमारे लिए जो वह चाहता है वही सर्वोत्तम है।

पवित्रीकरण हमारे लिए परमेश्वर का उद्देश्य है (4:7, 8)। वह हमें पवित्र करना चाहता है, जिसका अर्थ हमें एक विशेष उद्देश्य के लिए पृथक करना, या पवित्र करना। रंगशाला में बैठने के विशेष स्थान महत्वपूर्ण लोगों के लिए "आरक्षित" होते हैं। मसीही विशेष लोग हैं जो सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति - स्वयं परमेश्वर के लिए "आरक्षित" हैं।

जब परमेश्वर हमें मसीह में पवित्र करता है, तब हम परमेश्वर की पवित्रता के भागी हो जाते हैं और उसके साथ सहभागिता रख सकते हैं। "पर जैसा तुम्हारा बुलाने वाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चाल चलन में पवित्र बनो। क्योंकि लिखा है, कि पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूं" (1 पतरस 1:15, 16)।

जब हम परमेश्वर के साथ संगति रखते हैं तो उस संबंध के लाभ में भी सहभागी हो सकते हैं। जब हम मसीही बने, परमेश्वर ने हमें अपना पवित्र आत्मा दिया, जो वह उन्हें देता है "जो उस की आज्ञा मानते हैं" (प्रेरितों 5:32)। यह पवित्र आत्मा "उसके मोल लिये हुओं के छुटकारे के लिये हमारी मीरास का बयाना है ..." (इफिसियों 1:14)। जिस प्रकार किसी क्रय पर दिया गया बयाना या प्रारंभिक रकम यह दिखाने के लिए एक वचनबद्धता है कि आगे चलकर हम पूरी कीमत चुकाएंगे, उसी प्रकार परमेश्वर का आत्मा हमें यह बताने के लिए दिया गया है कि वह हमें अनंतकाल तक आशीषित करना चाहता है।

यदि किसी को विश्वास न हो कि हम पूरी कीमत चुकाएंगे, तो वह हमारे बयाने का इनकार कर देगा। इसी प्रकार जब एक दुर्बल मसीही ऐसे जीता है कि अपने अन्दर के परमेश्वर के आत्मा की पवित्रता का इनकार करे, तो वह

यह संकेत दे रहा है कि उसे विश्वास नहीं है कि परमेश्वर भविष्य में उसे आशीष देगा। जब कोई अपने आप को यौन अनैतिकता में जोड़ता है, तो वह एक प्रकार से परमेश्वर से यह कह रहा है, "मैं विश्वास नहीं करता हूँ कि आप मुझे अनंतकाल तक अपनी आशीषें देते रहेंगे।" वह यह दिखा रहा कि परमेश्वर के आशय झूठे हैं।

हमारे लिए शिक्षा यह है कि हम परमेश्वर द्वारा अपने आत्मा को हमारे साथ बाँटने की सराहना करें और यह दिखाएं कि हम विश्वास रखते हैं कि वह हमें आशीषित करना चाहता है। ऐसा करने के लिए हमें यौन अनैतिकता से "भागना" होगा (2 तीमुथियुस 2:2) और "पवित्रीकरण का पीछा" करना होगा, हमारे लिए परमेश्वर के कार्य को स्वीकार करके "प्रभु को देखने" के लिए तैयारी करनी होगी (इब्रानियों 12:14)। थिस्सलुनीके के लोग यीशु को देखना और उसके आगमन पर उसके साथ जुड़ जाना चाहते थे (1:10)। इस लालसा ने उनके जीवनों के लिए परमेश्वर की योजना के अनुसार जीने के लिए उनकी सहायता की। यही हमारी भी सहायता करेगा।

उपसंहार। परमेश्वर के समान होना एक अति महान कार्य है जिसमें हम सभी असफल रहते हैं। परमेश्वर उनकी गलतियों को क्षमा करता है जो मसीह में हैं जब वे पश्चाताप करके उनके लिए क्षमा माँगते हैं, और हम से आग्रह करता रहता है कि हम ईश्वरीय रवैये को तथा उन कार्यों को जो उसके चरित्र को प्रतिबिंबित करते हैं तथा उसके संसार में सबसे उपयोगी होने में सहायता करते हैं, अपनाएं। अनैतिकता एक प्रबल प्रलोभन है बहुधा जिसका उपयोग शैतान हमें परमेश्वर की पवित्र विधि से जीने से ध्यान हटाने के लिए करता है। हम अनैतिकता के खतरे से सचेत रहें और अपने आप को परमेश्वर के शुद्ध सेवक होने के लिए पृथक रखने की योजनानुसार रहें। हमें परमेश्वर के, जिसने हमें चुना है कि हम उसकी सेवकाई करें, विशेष लोग होना है। उस कार्य में सफल होने के लिए वही हमारी सहायता करेगा! TP

पवित्रीकरण एवं नैतिकता (4:1–8)

इस अध्याय की पहली आठ आयतों में पौलुस विशेषकर यौन नैतिकता पर चर्चा करता है। जब हम इन आयतों का परीक्षण करते हैं, तो लेख के प्रति वफादारी माँगती है कि हम एक महान आधारभूत सिद्धांत पर ज़ोर दें, एक महान मौलिक विचार, जिसे एक ही शब्द में, जो आयत 3 और 7 से आता है, समेटा जा सकता है: "पवित्रीकरण।" उसकी बहुत स्पष्ट नैतिक शिक्षाओं और आग्रहों का आधार यह महान, व्यापक, सामान्य सत्य है।

बुनियादी सिद्धांत (4:3, 7)। आयत 3 कहती है, "क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है कि तुम पवित्र बनो।" आयत 7 कहती है "क्योंकि परमेश्वर ने हमें

अशुद्ध होने के लिये नहीं, परन्तु पवित्र होने के लिये बुलाया है।"

इस शब्द "पवित्रीकरण" का वास्तविक अर्थ क्या है? यह "संत" शब्द के समान है। यह बुनियादी शब्द *hagios* से आया है जिसके मूल में "अलग होना" है।

पुराने नियम के समय में याजक पगड़ी या साफा पहनता था जिस पर एक सुनहरी तख्ती लगी होती थी। इस तख्ती पर "परमेश्वर के लिए पवित्र" शब्द खुदे हुए होते थे। इसका अर्थ था कि, अन्य बातों के अतिरिक्त लेवी के घराने का यह विशेष याजक परमेश्वर के उद्देश्यों के लिए पृथक किया गया है।

जब हम शब्दों "संत," "पवित्रीकरण," और "पवित्र" को सुनते हैं तो हमें यह विचार आता है कि यह दिखाने की ऊपरी बातों में अलौकिक रवैये, कृत्रिम भाव, एक आकर्षक प्रतीत होने वाली धर्मपरायणता से संबंधित है। "पवित्रीकरण" एक आधारभूत, मौलिक रीति से परमेश्वर और उसके उद्देश्यों के लिए समर्पित होना है। इसमें नकारात्मक और सकारात्मक दोनों ही दबाव हैं। हम सेवकाई के लिए पाप से पृथक किए गए हैं।

कोई कब पृथक होता है? किसी का पवित्रीकरण कब होता है? 1 कुरिन्थियों 6:9–11 इस प्रश्न का उत्तर देता है। पौलुस ने लिखा, "... धोखा न खाओ, न वेश्यागामी, न मूर्तिपूजक, न परस्त्रीगामी, न लुच्चे, न पुरुषगामी। न चोर, न लोभी, न पियक्कड़, न गाली देने वाले, न अन्धेर करने वाले परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे। और तुम में से कितने ऐसे ही थे, परन्तु तुम प्रभु यीशु मसीह के नाम से और हमारे परमेश्वर के आत्मा से धोए गए, और पवित्र हुए और धर्मी ठहरे।" आयत 11 दिखाती है कि हम जब भी धोए जाते हैं, जब भी पवित्र किए जाते हैं, तब हम धर्मी ठहराए जाते हैं। दूसरे शब्दों में धर्मी ठहरना तब होता है जब हम सुसमाचार का आज्ञापालन करते हैं। पौलुस ने 1 थिस्सलुनीकियों 4 में कहा, "क्योंकि परमेश्वर ने हमें अशुद्ध होने के लिये नहीं, परन्तु पवित्र होने के लिये बुलाया है" (आयत 7)। उसने हमें सुसमाचार के द्वारा बुलाया है (2 थिस्सलुनीकियों 2:14)।

धर्मी ठहरना मन परिवर्तन के समय होता है; परन्तु साथ ही धर्मी ठहरना एक प्रक्रिया भी है। हम से इब्रानियों 12:14 में आग्रह किया गया है "सब से मेल मिलाप रखने, और उस पवित्रता के खोजी हो जिस के बिना कोई प्रभु को कदापि न देखेगा।" किसी से पूछा गया कि "मसीही होने में कितना समय लगता है?" जो उत्तर प्रस्तावित किया गया वह था, "एक पल तथा जीवनकाल।" आप के परिवर्तन के समय, बाइबल के अनुसार मसीह में बपतिस्मा के समय, आप पृथक किए गए। किंतु, इसके पश्चात शान्ति, पवित्रता, और धार्मिकता के पीछे आजीवन चलते रहने का समय आता है। यह एक पल का कार्य तथा जीवन भर कि प्रक्रिया दोनों ही है। इस प्रकार लगातार पवित्रता का पीछा किए बिना,

हम परमेश्वर को नहीं देख सकते हैं। यदि हम सुसमाचार का पालन करें परन्तु धार्मिकता और पवित्रता का अनुसरण नहीं करें, तो हम प्रभु को नहीं देखने पाएंगे।

निषेध (4:1–5)। महान, विस्तृत, सामान्य सिद्धांत अनेक विशिष्ट बातों से संबंधित है। पौलुस का ध्यान एक विशेष बुराई पर था जो प्रथम शताब्दी के रोमी साम्राज्य के यूनानी शहरों में बहुत आम थी तथा आज हमारे संसार में व्याप्त है। वह उस सामान्य सिद्धांत को विशेषतः व्यभिचार के पाप से बंधित करता है।

क्या आप यीशु को वैसी मलिन, गन्दी, अशुद्ध, भ्रष्ट, अश्लील, और असभ्य बातें कहते हुए कल्पना कर सकते हैं जैसे उस राजा के अनुयायी होने का दावा करने वालों के होंठों से कभी कभी निकलती हैं?

पवित्रता ऐसा सिद्धांत है जो विस्तृत रूप से हमारे जीवनों में लागू होता है। इसे व्यावसायिक व्यवहार तथा हमारे जीवनों के प्रत्येक क्षेत्र में लागू होना चाहिए। इस लेख में, पौलुस ने इसे एक विशेष क्षेत्र में लागू किया, इसलिए अब हम सिद्धांत से निषेध की ओर बढ़ते हैं।

"क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है कि तुम पवित्र बनो" - यह सामान्य सिद्धांत है। "अर्थात् व्यभिचार से बचे रहो" - यह उसका विशिष्ट लागू किया जाना है। वह एक निषेध, एक नकारात्मक, एक बात जिससे बचना है कहता है। उसने कहा, "व्यभिचार से बचे रहो, और तुम में से हर एक पवित्रता और आदर के साथ अपनी पत्नी को प्राप्त करना जाने, और यह काम अभिलाषा से नहीं, और न उन जातियों के समान जो परमेश्वर को नहीं जानतीं।"

पौलुस ने कहा, "व्यभिचार से बचे रहो।" व्यभिचार *पॉरनैया* शब्द से आया है, और कुछ घृणित अंग्रेज़ी शब्द उस शब्द से संबंधित हैं - "पोरनोग्राफिक," "पोरनोग्राफी" इत्यादि। शब्द *पॉरनैया* सभी प्रकार की यौन अनैतिकता के लिए प्रयुक्त युनानी शब्द है।

हम कोई ऐसी पगड़ी जिस पर सोने की पटिया पर लिखा हो "प्रभु के लिए पवित्र" तो नहीं पहनते हैं, परन्तु हम फिर भी एक पवित्र राष्ट्र, चुना हुआ वंश, और परमेश्वर की निज प्रजा हैं (1 पतरस 2:9)।

कोई अपने शरीर पर "अधिकार" कैसे रखे? क्या इस शब्द का अर्थ प्राप्त करना है? हमारे शरीर तो हमारे ही पास हैं। मैं यह तो समझ सकता हूँ कि कैसे इसका अर्थ पत्नी प्राप्त करना या उस पर अधिकार रखना हो सकता है, परन्तु यही शरीर के लिए कैसे लागू हो सकता है? जब पौलुस ने लिखा "तुम में से हर एक पवित्रता और आदर के साथ अपनी पत्नी को प्राप्त करना जाने," तो अंग्रेज़ी भाषा में इस अभिव्यक्ति का अर्थ "प्रभुत्व प्राप्त करना" या अधिकार हो सकता है, इस अभिप्राय से नहीं कि उसे प्राप्त करो (क्योंकि वह तो तुम्हारे

पास है ही), वरन "उस पर श्रेष्ठता बना लेना।" जो सुझाव दिया गया है शेष परिच्छेद उसके पक्ष में तर्क देता है।

सामर्थ्य (4:6–8)। अन्यजाति लोग जैसा जीवन वे जीते थे वैसा इसलिए था क्योंकि वे परमेश्वर को नहीं जानते थे। मूर्तिपूजक धर्म, विशेषकर प्रजननशक्ति के उपासक, अनैतिकता का पालन अपने धार्मिक अनुष्ठानों के भाग के रूप में करते थे।

पौलुस ने कहा, "प्रभु इन सब बातों का पलटा लेने वाला है" (आयत 6)। यह एक ऐसा अभिप्राय है जिसके बारे में आज हम अधिक नहीं सुनते हैं। यद्यपि यह सत्य है कि पौलुस ने गहना शब्द का प्रयोग नहीं किया, जैसा कि सुसमाचारों में यीशु के प्रवचनों में मिलता है। परन्तु परमेश्वर के प्रकोप के विषय में कहने के लिए उसके पास बहुत कुछ था। उसके पास इस तथ्य पर कि, ढिठाई के साथ अपश्चातापी होना ईश्वरीय कोप में निवेश करना है, कहने के लिए बहुत कुछ था।

एक अन्य महान अभिप्राय जो इस लेख में आता है, और जिसका उल्लेख हम 7 आयत में पहले ही कर चुके हैं: "क्योंकि परमेश्वर ने हमें अशुद्ध होने के लिये नहीं, परन्तु पवित्र होने के लिये बुलाया है।" अपने वार्तालाप के बारे में विचार करें। पाप के लिए उस मर जाने के बारे में सोचें। उस समय के बारे में सोचें जब आप धोए गए और पवित्र हुए। उसने आप को मलिनता के लिए नहीं बुलाया। उसने विशेष लोगों को बुलाया, जो भले कामों के लिए उत्साही हों, एक शुद्ध, पवित्र, और राज-आयतधारी याजकों का समाज हों। बुलाहट का स्मरण है? परिवर्तन का स्मरण है? धोए जाना, पवित्र किए जाना, धर्मी ठहराए जाना स्मरण है?

कुछ और भी स्मरण करें: "इस कारण जो इसे तुच्छ जानता है, वह मनुष्य को नहीं परन्तु परमेश्वर को तुच्छ जानता है, जो अपना पवित्र आत्मा तुम्हें देता है" (आयत 8)। जाति जाति के लोगों को हुल्लड़ मचाने दें, और देश देश के लोगों को व्यर्थ बातें सोचने दें। ये परमेश्वर द्वारा मनमानी के लिए ऐसे ही दे दिए गए दिशा निर्देश नहीं हैं कि जीवन से उसकी भरपूरी चुराई जा सके। भक्ति में उस जीवन की प्रतिज्ञा है जो वर्तमान है और जो आने वाला है। सबसे अधिक भरपूरी का, सबसे अच्छा, सबसे समृद्ध, सर्वोत्तम जीवन जो वर्तमान तथा भविष्य में हो सकता है मसीह के वचन और वचन के मसीह में पाया जाता है। इफिसियों 5:11 की भाषा में, "और अन्धकार के निष्फल कामों में सहभागी न हो, वरन उन पर उलाहना दो।"

उपसंहार। स्मरण रखो कि वह तुम्हारे लिए मरा! वह भले काम करने के लिए तत्पर लोगों को अपने लिए पवित्र करने के लिए मरा, ऐसे लोग जो बहुत भिन्न हों, लोग जो टेढ़ी और विकृत पीढ़ी में ज्योति के समान चमकें। हम धर्मी

लोगों के समान जीवन जीएं, क्योंकि निश्चित तौर पर हम हैं। AM

"भाईचारे की प्रीति" में चलें (4:9, 10)

हम "भाईचारे की प्रीति" को आयत 9अ में देखते हैं। यह सहज, स्वाभाविक प्रेम भावना है जिसे कोई अपने परिवार के लिए अनुभव करता है। जिन से प्रेम होता है इसमें उनके प्रति समर्पण निहित है (देखें रोमियों 12:10)।

थिस्सलुनीकियों ने "आपस में प्रेम रखना तुम ने आप ही परमेश्वर से सीखा है" (आयत 9ब)। इसका यह अर्थ नहीं है कि परमेश्वर ने सीधे उन्हीं को प्रकाशन दिया। वरन, इसका अर्थ है कि परमेश्वर ने उन्हें सीधे पौलुस के द्वारा सिखाया जब वह वहाँ था (प्रेरितों 17:2)। यद्यपि पौलुस माध्यम था, सन्देश परमेश्वर का था (2:13)।

थिस्सलुनीकियों ने एक दूसरे के प्रति अपने प्रेम को मकिदुनिया के भाईयों के प्रति दिखाई दयालुता के द्वारा प्रदर्शित किया (आयत 10अ)। पौलुस ने उनके प्रेम के बारे में तिमुथियुस से सुना (3:6), और उनकी दयालुता अपनी मण्डली के बाहर पहुँच गई थी। वे सभी भाईयों से प्रेम करते थे, जिनमें धनी, निर्धन, पुरुष, महिलाएं, शिक्षित, अशिक्षित, स्वतंत्र, और दास सभी सम्मिलित थे।

जो प्रेम वे पहले ही दिखा चुके थे उसके होते हुए भी पौलुस ने उन से कहा कि वे उसमें "और भी बढ़ते जाएं" (आयत 10ब)। उन्हें दूसरों के लिए आशीष होने के और भी मार्ग ढूँढने थे, औरों के प्रति प्रेम में और बढ़ना था। EE

जीवन में शान्त रहें (4:11)

पौलुस ने थिस्सलुनीकियों को प्रोत्साहित किया कि वे "चुपचाप रहने ... का प्रयत्न करें" (आयत 11), जो एक विचित्र अभिलाषा प्रतीत होती है। "चुपचाप रहने" से उसका क्या तात्पर्य था? इसका संबंध उन लोगों की समस्या से था जिन्होंने मसीह के दूसरे आगमन के लिए अपने सांसारिक कार्य त्याग दिए थे (2 थिस्सलुनीकियों 3:1–15)। आयत 11 में, उनका ध्यान केंद्रित रखने के लिए पौलुस ने उन्हें तीन निर्देश दिए।

"चुपचाप रहें।" इसके लिए NEB में आया है "शान्त रहने का प्रयत्न करें" परेशान होने के स्थान पर। हमें शान्त रहना चाहिए, जिससे, शान्ति उत्पन्न हो।

"अपना-अपना काम काज करें।" एक प्रकार से तो हमें निर्देश है कि "हर एक अपनी ही हित की नहीं, वरन दूसरों की हित की भी चिन्ता करे" (फिलिप्पियों 2:4)। परन्तु हमें दूसरों के काम काज में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। पतरस ने लिखा, "तुम में से कोई व्यक्ति हत्यारा या चोर, या कुकर्मी होने, या पराए काम में हाथ डालने के कारण दुख न पाए" (1 पतरस 4:15)।

हस्तक्षेप ना करने का सबसे कारगर उपाय है अपने काम काज पर ध्यान लगाए रखना। हमें अपने उत्तरदायित्व को जानना, उन्हें मानना, और उन्हें पूरा करना है।

"अपने हाथों से काम करें।" हमें अपने जीवन यापन के लिए काम करना चाहिए, जिससे हमें "किसी वस्तु की घटी न हो" (आयत 12ब)। जब हम स्वयं काम कर सकते हैं तो दूसरों पर निर्भर रहना गलत है। बाद में पौलुस ने 2 थिस्सलुनीकियों में लिखा "यदि कोई काम करना न चाहे, तो खाने भी न पाए" (3:10)। इसका यह अर्थ नहीं है कि यदि कोई अपंग हो या उसे काम नहीं मिल रहा है तो हम उसकी सहायता नहीं करें (देखें इफिसियों 4:28; याकूब 2:14–16)। वरन, पौलुस के वचन थिस्सलुनीके में उन गड़बड़ी करने वालों के लिए थे जो काम नहीं कर रहे थे और कलीसिया की प्रतिष्ठा को हानि पहुँचा रहे थे। पौलुस ने कलीसिया से आग्रह किया कि वे एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करें "ताकि बाहर वालों से आदर प्राप्त करो, और तुम्हें किसी वस्तु की घटी न हो" (आयत 12)।

क्या हमारी कलीसियाओं में भी ऐसे लोग होते हैं? पौलुस ने कहा, "काम करो।" हमें एक दूसरे को प्रोत्साहित करना है कि हम अपन ध्यान प्रभु की कलीसिया को बनाने में लगाएं ना कि बिगाड़ने में। EE

प्रेम करना और जीना (4:9–12)

मसीहियों के पास बढ़ोतरी के लिए स्थान सदा रहता है। नए नियम की अन्य पत्रियों के समान, 1 थिस्सलुनीकियों हमें अच्छे व्यवहार में बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता है। उन युवा, विश्वासयोग्य, और प्रेमी मसीहियों को जिन्हें यह पत्री भेजी गई निर्देश दिया गया कि वे अनैतिकता से बचें और पवित्रता के प्रयत्नशील हों, परन्तु उन्हें अपने जीवनों में दो सकारात्मक गुणों को विकसित करने के लिए भी प्रोत्साहित किया गया: उत्साही प्रेम और शान्त जीवन। ये गुण उन दोनों ही पर - साथी मसीही तथा वे जो प्रभु की कलीसिया से बाहर थे, जो उनके आस पास थे, अच्छा प्रभाव डालते। परमेश्वर की दृष्टि में सही प्रकार का व्यवहार रखना अपने आस पास के लोगों पर सकारात्मक और सहायतापूर्ण प्रभाव डालने का सबसे अच्छा मार्ग था। सुसमाचार उनके जीवनों से प्रदर्शित होता।

परमेश्वर के मार्गानुसार प्रेम करना और जीना वे गुण होने चाहिएं जिन्हें हम मसीही बढ़ोतरी के भाग के रूप में विकसित करते हैं। मसीही परिपक्वता इससे संबंधित है कि हम अपने आस पास के लोगों के साथ कैसा व्यवहार रखते हैं और अपने दैनिक जीवनों को कैसे चलाते हैं।

प्रेम में बढ़ना (4:9, 10)। क्या हम प्रेम में बढ़ रहे हैं? यह प्रश्न पूछना

लज्जाजनक हो सकता है। कभी हम इसलिए लज्जित होते हैं क्योंकि हम प्रेम में परिपक्व होने का प्रयास नहीं कर रहे हैं। कभी यह पूछना असुविधाजनक होता है क्योंकि हम सोचते हैं कि प्रेम करने वाला होना हमारे स्वभाव में नहीं है। यह पूछना विचलित करने वाला भी हो सकता है क्योंकि हम मानते हैं कि हम पहले से ही लोगों से प्रेम कर रहे हैं।

प्रेरित थिस्सलुनीके में सुसमाचार प्रचार करने के लिए आए (2:2), और ये लोग जो परिवर्तित हुए उन्होंने इसे परमेश्वर का सन्देश मानकर ग्रहण किया (2:13)। निःसन्देह उन्हें दी गई शिक्षा में परमेश्वर के प्रेम का सन्देश भी था (1:4)। प्रचारकों ने अपने कार्यों द्वारा थिस्सलुनीकियों के लिए इस प्रेम को प्रदर्शित भी किया (2:7, 8)। नए मसीहियों ने उस प्रेम का अनुसरण किया जिसके बारे में उन्होंने शिक्षाओं में सुना और इन यात्री प्रचारकों से अनुभव किया (3:6)। उन्हें प्रेम के बारे में बताए जाने की आवश्यकता नहीं थी क्योंकि उन्होंने पहले ही उसके बारे में सुना, अनुभव किया, और उस आज्ञा का पालन कर लिया था।

यह वही प्रक्रिया थी जिसके लिए यीशु ने भविष्यवाणी की थी कि वह परमेश्वर के लोगों में सुसमाचार का प्रमाण होगा जब उसने कहा था, "मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं, कि एक दूसरे से प्रेम रखो: जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दुसरे से प्रेम रखो। यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे, कि तुम मेरे चेले हो" (यूहन्ना 13:34, 35)। उस युवा कलीसिया को लिखी गई इस पत्री में, पौलुस ने कहा कि परमेश्वर की योजना थी कि यह प्रक्रिया चलती रहे और उनके जीवनों में बढ़ती जाए।

अपनी मण्डली में तथा प्रांत में पड़ोस, जैसे कि बीरिया और फिलिप्पी, की कलीसियाओं के प्रति उनके प्रेम के लिए इन मसीहियों की सराहना की गई। उन्हें प्रोत्साहित किया गया कि वे प्रेम में बढ़ें, जैसा कि उन्हें पहले की एक पत्री में किया गया था (3:12)। इस पत्री को प्राप्त करने वालों की प्रेम ना करने के लिए आलोचना नहीं हो रही थी, अपितु उन्हें अपनी और महान संभावनाओं तक पहुँचने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा था (4:9, 10)।

क्यों इस प्रिय कलीसिया को बार-बार और अधिक प्रिय होने के लिये कहा गया? उनके लिये प्रेम मसीहियत का एक महत्वपूर्ण पहलू होना चाहिए। यदि यह उनके लिये महत्वपूर्ण था, तो हमारे लिये भी यह महत्वपूर्ण होना चाहिए। हमारा प्रेम करना कैसा है? क्या हमारी कलीसिया के लोग और हमारे समुदाय के लोग हमारे प्रेम के बारे में जानते हैं? क्या हम प्रेम करने का गुण रखते हैं जैसे यीशु के इन नए चेलों ने रखा?

प्रेम को कैसे बढ़ाया जा सकता है? प्रेम को बढ़ाने के लिये हम दूसरों की सहायता किस प्रकार कर सकते हैं? यीशु के प्रेम की समझ रखने और व्यक्त

करने के द्वारा। यीशु ने अपने चेलों से कहा एक दूसरे से प्रेम रखो "जैसा मैंने तुमसे प्रेम रखा है" (यूहन्ना 13:34; 15:12)। पहले, हमें समझना ज़रूरी है कि उसका प्रेम कैसा है।

हमें यीशु के द्वारा प्रगट किए गए परमेश्वर के प्रेम को जानने की ज़रूरत है। यीशु के सच्चे चेले बन, उसके आयतचिन्हों पर चलते हुए, हमें उसके पीछे चलने का गुण सीखना ज़रूरी है। हमें प्रेमपूर्ण विचारों, शब्दों और कार्यों और इन प्रेमपूर्ण आचरणों को सीखने की ज़रूरत है। हम किसी मनुष्य के लिये, उसी समय मसीह के समान प्रेम करने के अभ्यास की शुरुआत सरलता से कर सकते हैं। यदि हम प्रेम को प्रगट करना चाहें तो नए विश्वासियों के प्रति इन शिक्षकों के कार्यों का अभ्यास करने में, परमेश्वर हमारी अगुवाई करें और हम दूसरों की उन्नति में सहायता प्रेमपूर्वक कर पाएंगे।

चाल चलन में बढ़ना (4:11)। थिस्सलुनीके के विश्वासियों को कहा गया था कि उनका काम उनका "उद्देश्य" था (4:11)। परमेश्वर उनसे चाहता था कि वे अपने-अपने कामों को अच्छे से करते रहें। इस कलीसिया को लिखी गई दूसरी पत्री में, परमेश्वर उन्हें दूसरों के काम काज में हस्तक्षेप करने के खतरे के बारे में सिखाता है। आयत 11 वर्णन करती है कि काम कितना ज़रूरी है। परमेश्वर के लिये यह एक महत्वपूर्ण बात है, और वह चाहता था कि उनके लिये भी यह एक महत्वपूर्ण बात हो।

कभी-कभी हम सोचते हैं कि परमेश्वर को केवल उन लोगों के काम में रूचि है, जो उपदेश और बाइबल की शिक्षा देते हैं। वह थिस्सलुनीके की कलीसिया—और हमसे चाहता था—कि "अपने-अपने हाथों से कमाना" सीखें जो उसके लिये महत्वपूर्ण है। इस प्रकार इन भाइयों ने काम करने के लिये परमेश्वर की आज्ञा को स्वीकार किया, परन्तु उन्होंने लोगों के बड़े-बड़े उदाहरण भी देखें जो चुपचाप और धीरज के साथ सुसमाचार प्रचार के लिये कठिन परिश्रम करने के लिये तैयार किए गए थे, जिस प्रकार दूसरों पर भार न बनने के लिये उन्होंने दिन और रात काम किए (2:8, 9)।

इन विश्वासियों को अब इस रीति का पालन करने को कहा गया। कुलुस्से में स्वामी और दास के समान, उन्हें अनुभव करना ज़रूरी था कि परमेश्वर हम सब का स्वामी है, जो हमारे काम को अपनी अगुवाई में कर रहा है और हमारे काम को अपना काम जानता है। कुलुस्से के लोगों को कहा गया था, कि "जो कुछ तुम करते हो, तन मन से करो, यह समझकर कि मनुष्यों के लिये नहीं परन्तु प्रभु के लिये करते हो" (कुलुस्सियों 3:23)। उनके पास संसार में सबसे महान स्वामी था! वह हमारा भी स्वामी है! परमेश्वर के लिये काम करें!

परमेश्वर चाहता है कि हम महत्वकांक्षी बने। वह यह नहीं चाहता कि हम अपने उद्देश्य की प्राप्ति ऐसे साधनों से करें जो परमेश्वर को भावता न हो, परन्तु

चाहता है कि अपने कामों में स्वयं के उत्तम प्रयासों के द्वारा प्राप्त करें। वह हमारी क्षमता और सीमा को जानता है। वह हमेशा वही चाहता है जो हमारे लिये सबसे उत्तम है। वह जानता है कि काम करना हमारे लिये अच्छा है और उसे अच्छे से करने से हमें और दूसरों लाभ मिलता है। हमारा काम परमेश्वर के लिये बहुत महत्वपूर्ण है।

जो परमेश्वर को प्रसन्न करता है वह हमारे लिये ज़रूरी है कि हम उसके लिये काम करते रहें और वह जैसा चाहता है वैसा ही करते रहें।

बाहरवालों को प्रभावित करना (4:12)। अपने कार्य क्षेत्र में परमेश्वर के लिये चुपचाप अच्छे से काम करते रहने के क्या परिणाम होते हैं? ऐसे दो परिणामों के बारे में 4:12 में बताया गया है: उन लोगों पर प्रभाव जो कलीसिया के बाहरवाले हैं और आपकी जरूरतों पर प्रभाव का पड़ना।

कलीसिया के बारे में बाहरवाले क्या सोचते हैं? थिस्सलुनीके में कुछ लोग सुसमाचार प्रचार और जो उसके सन्देश का पालन करते थे उनका विरोध करते थे। प्रेरितों के कार्य 17 बताता है, सुसमाचार प्रचारकों और जो उनके सन्देश पर मन लगाते थे कुछ यहूदियों ने जोश दिखाते हुए उन पर सताव डाला। कलीसिया के प्रति बाहरवालों की क्या प्रतिक्रिया होगी? वे इससे प्रेम करेंगे या नहीं? यह उन पर निर्भर करता है। जैसा परमेश्वर के बारे में समझा जाता है वैसे ही अपने पड़ोसियों की दृष्टि में हम मसीहियों को व्यवहार रखना है। जबकि सताव के समय में भी, थिस्सलुनीके के मसीहियों ने बहुत अच्छा व्यवहार रखा था। चारों ओर फैले हुए मसीहियों को कहा गया था कि, "अन्यजातियों में तुम्हारा चाल चलन भला हो; ताकि जिन-जिन बातों में वे तुम्हें कुकर्मी जानकर बदनाम करते हैं, वे तुम्हारे भले कामों को देखकर उन्हीं के कारण कृपा-दृष्टि के दिन परमेश्वर की महिमा करें" (1 पतरस 2:12)।

मसीह से बाहरवालों के साथ सम्पर्क रखने पर; बुराई से केवल दूर रहना महत्वपूर्ण बात नहीं है, परन्तु जो अच्छाई हमारे जीवन में है उसे भी उन्हें देखने दो। "अवसर को बहुमूल्य समझकर बाहरवालों के साथ बुद्धिमानी से व्यवहार करो" (कुलुस्सियों 4:5)। परमेश्वर गैर-मसीहियों के ाथ हमारे आपसी व्यवहार को एक बहुमूल्य अवसर के समान देखता है कि हम उन्हें परमेश्वर के मार्ग दिखाएँ। और उनकी प्रतिक्रिया क्या होनी चाहिए यह उनपर निर्भर करता है। उनकी प्रतिक्रिया के लिये हम जिम्मेदार नहीं हैं, परन्तु अपने जीवन के द्वारा उन्हें सिखाने का हमारे पास एक अवसर है और उनके पास सीखने का भरपूर अवसर है कि परमेश्वर उनके जीवनों में क्या चाहता है। परमेश्वर के वचन को कार्य रूप में देखने के लिये हम उनकी पहली और एकमात्र अवसर उन्हें प्रदान कर सकते हैं!

परमेश्वर और उसके सन्देश को न जाननेवाले लोगों के बीच जब हम

मसीही के रूप में परमेश्वर के मार्ग पर चलते हैं, बाहरवाले हमारे व्यवहार के कारणों से बहुत आश्चर्य होंगे। यह एक अच्छा अवसर है उन्हें बताने का कि परमेश्वर जो चाहता वही हम करने का प्रयास करते हैं। हमें परीक्षा को रोकना चाहिए यह कहने के लिये कि "वही है जो मेरी माता ने मुझे सिखाया था" या "वह है जो मैं सोचता हूँ सही है।" ये बातें सच हो सकते हैं, वे परमेश्वर को महिमा नहीं देते। जबकि, उनका ध्यान हम पर रहता है। हमारे कुछ भी करने का कारण वही होना चाहिए जो परमेश्वर चाहता है। फिर तो, हमारे लिये एक ऐसा उत्तर देना सबसे अच्छा है जो परमेश्वर की पहचान और आदर देता है। हम कह सकते हैं, "यह वही है जो परमेश्वर चाहता है"; "इसी लिये परमेश्वर का वचन हमें कहता है कि यह उसके मार्ग पर चलने का सबसे अच्छा तरीका है"; या "परमेश्वर जानता है कि जीने के इसी तरीके से सबसे अधिक लाभ मिलता है।"

अपने काम को अच्छे से करने का दूसरा कारण आयत 12 में दिया गया है कि हमें किसी बात की घटी नहीं होगी। जो कुछ करने को परमेश्वर हमसे चाहता है उसमें हमारे लिये लाभ होगा। हमारा काम बाहरवालों पर न केवल प्रभाव डालता सकता है, बल्कि यह हमारी दैनिक जरूरतों का भी ध्यान रख सकता है। इफिसुस में मसीहियों को कहा गया था कि "चोरी करनेवाला फिर चोरी न करे, वरन् भले काम करने में अपने हाथों से परिश्रम करे, इसलिये जिसे प्रयोजन हो उसे देने को उसके पास कुछ हो" (इफिसियों 4:28)। अपनी जरूरतों की पूर्ति के लिये काम करना और ज़रूरतमंद लोगों को देना हरेक मसीही जीवन का एक हिस्सा होना चाहिए।

इन दिनों में, सरकार के पास अकसर जरूरतमंद लोगों की सहायता के लिये जन कल्याण कार्यक्रम होते हैं। इन कार्यक्रमों से बहुत लोग लाभान्वित हो चुके हैं, परन्तु ऐसे लाभों से लाभ उठाना परमेश्वर को भावता योग्य नहीं होता, तब जब हम स्वयं की सहायता के लिये कार्य करना पसंद करते हैं। हम मसीहियों के बीच कार्य करने की इच्छा को कैसे विकसित कर सकते हैं? हम अपने बच्चों से शुरू कर सकते हैं, अच्छे उदाहरणों को सामने रखते हुए; जब भी ज़रूरत हो लोगों की सहायता करने के लिये उनको उत्साहित करने के द्वारा, ऐसी जिम्मेदारियों को सौंपना जिन्हें वे पूरा कर सकते हों, और उन्हें ऐसे जिम्मेदारियों के बारे में सिखाना जिनका सामना उन्हें अपनी जवानी में करनी होगी। हम उनकी सहायता अपने काम को परमेश्वर की ओर से दिया, उसके इच्छायोग्य, स्वयं और दूसरों के लिये लाभ की बात समझकर करें, न कि ऐसा कुछ काम जिसे जबरन उन्हें करना पड़े या जिसे करने की इच्छा न होने पर टाल दिया जाए।

मसीही जो आलसी होते हैं—जो अपने परिवारों की चिंता नहीं करते और

काम करना पसंद नहीं करते—वे परमेश्वर के स्वभाव पर धब्बा लगानेवाले होते हैं। इसके विपरीत, मसीही जो काम करते, अपनी जरूरतों की चिंता करते और दूसरों की सहायता करते हैं, वे अपने चारों ओर लोगों पर एक बड़ा प्रभाव को लानेवाले होते हैं। ऐसा व्यवहार प्रगट करने से, वे दूसरों को दिखाते हैं कि परमेश्वर और उसके लोग कैसे होते हैं, साथ ही वे अपने चारों ओर के लोगों के लिये चिंता जताते हुए समाज के लिये एक बड़े हित का कारण होते हैं। मसीही परमेश्वर के संसार में बहुत से लोगों के लाभ के लिये परमेश्वर के कार्यकर्त्ता होते हैं।

उपसंहार। हम सब इन आयतों में दिए गए निर्देशों से उमड़ते प्रेम में और अधिक "उन्नति" करने के लिये लाभ प्राप्त कर सकते हैं। प्रेम के माध्यम से, हम अपने भाइयों के लिये सबसे अच्छा उत्साहवर्धन का स्रोत बन सकते हैं। शांतिपूर्वक काम करने से, हम अपने जरूरतों का ध्यान रख सकते और जो परमेश्वर के परिवार से बाहरवाले लोग हैं उनपर बड़े से बड़ा प्रभाव डाल सकते हैं। TP

कार्यक्षेत्र में प्रतिदिन का जीवन (4:9–12)

पौलुस हमेशा अपने पाठकों की जरूरतों को संबोधित करने में सक्षम थे। जिस पृष्ठभूमि से वे आते थे उसके कारण थिस्सलुनीकियों की कुछ विशेष समस्याएँ थी, अध्याय के इस भाग में पौलुस ने उन समस्याओं पर चर्चा किया।

थिस्सलुनीके की कलीसिया विश्वास कर चुकी थी कि उनके जीवित रहते मसीह का पुनः आगमन होने वाला था। मसीह के आगमन के बारे में शिक्षाओं को सुनने से उनमें भ्रांतियाँ पाई जाती थी। इस उलझन के कारण, उनमें से कुछ लोग अपने प्रतिदिन के काम के प्रति सुस्त हो गए थे, वे कामचोर और अपनी व्यक्तिगत जरूरतों के लिये दूसरे विश्वासियों पर निर्भर हो रहे थे। जिस प्रकार पौलुस ने प्रतिदिन जीवन यापन के प्रश्नों को संबोधित किया, उसने कार्यक्षेत्र से सम्बन्धित शिक्षाएँ भी दी।

वे एक दूसरे से प्रेम करने वाले थे. यह आज्ञा पौलुस की पत्री में पाई जाती है, और ठीक यही, मसीह की प्रमुख शिक्षा थी। एक ही पिता के बच्चों को एक दूसरे से प्रेम करना चाहिए। यह एक कर्तव्य है जिसे हरेक मसीही समझ चुके हैं क्योंकि परमेश्वर ने आरम्भ से यही सिखाया है। यह शिष्यता का एक प्रमाणस्वरूप है (यूहन्ना 13:35)। कलीसिया की वृद्धि के लिये इस आज्ञा का पालन करना बहुत ज़रूरी है (इफिसियों 4:16)। वे पहले से ही प्रेम का उदाहरण थे, परन्तु पौलुस उन्हें प्रोत्साहित करता था कि वे इस बंधन में और अधिक बढ़ते चले जाएँ।

वे चुपचाप और अनुशासित जीवन की ओर बढ़ने वाले थे. अर्थात् वे

परमेश्वर में विश्राम करने और संसार की चिंताओं में उलझे रहने वाले नहीं थे, अपने काम से काम रखते थे। वे अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने में विश्वासयोग्य, आलस्य से दूर रहने वाले और जो उनका काम था उसको करने में परिश्रमी थे। एक विश्वासयोग्य मसीही आलस्य के स्वभाव से भागना चाहता है। इस पुस्तक में यह चेतावनी पहली संकेत है कि कुछ लोग प्रभु के अति शीघ्र आगमन की आशा कर रहे थे और मसीह की प्रतीक्षा में अपनी जीविका के लिये काम करना छोड़ दिए थे।

वे मसीह से बाहरवालों के लिये उदाहरण का जीवन जीने वाले थे. एक मसीही को अपने आप को बाकी के संसार से अलग-थलग रख कर नहीं देखना चाहिए। एक अविश्वासी-मसीही को सरलतापूर्वक ग्रहण करना चाहिए कि मसीही जीवन सभी के सामने एक आदर की बात है।

ये चेतावनियाँ कार्यक्षेत्र में उनके व्यवहार से सम्बन्धित हैं। वे एक-दूसरे के प्रति विशेष प्रेम रखनेवाले, अपने काम से काम रखनेवाले और अपने व्यक्तिगत जिम्मेदारियों को पूरा करनेवाले थे, जैसे कि अपने परिवारों की जरूरतों की पूर्ति करना। इसके साथ ही, वे उन लोगों के साथ जो मसीही नहीं थे आदर से रहनेवाले थे। आप इस जीवनशैली को "कार्यक्षेत्र में मसीहियों की सी चाल चलन" कह सकते हैं। EC

द्वितीय आगमन (4:13–18)

कुछ लोगों ने मसीह की वापसी की आशंका जताई। 1994 में *चार्ल्सटन डेली मेल* ने विवरण प्रस्तुत किया कि, "संसार के अंत का पूर्वानुमान करने पर प्रचारक गलत है।"[21] यह लेख हेरोल्ड कैम्पिंग नामक एक रेडियो प्रचारक के द्वारा कथित दावों पर विचार विमर्श था। उसने कहा कि मंगलवार 6 सितम्बर, 1994 को संसार का अंत हो जाएगा। विलियम मिलर ने 1843 और 1844 में द्वितीय आगमन का समय निर्धारित किया। उसके पीछे चलने वाले लोगों ने कम से कम छः बार संसार के अंत का पूर्वानुमान लगाया, और वे हमेशा गलत ठहरे! हमें यीशु के वचनों को सुनना चाहिए, "उस दिन या उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत और न पुत्र; परन्तु केवल पिता" (मरकुस 13:32)।

द्वितीय आगमन के अध्ययन में नहीं पूछना चाहिए कि यह *कब* होगा, परन्तु यह कि जब प्रभु आएगा तब *क्या* होगा। इस विषय पर विस्तृत जानकारी 1 थिस्सलुनीकियों 4:13–18 में दी गई है। पौलुस उस आगमन के बारे में कलीसिया को सूचित करना चाहता था, इस कारण वर्णन करते हुए उसने इस प्रकार उत्तर दिया।

थिस्सलुनीके की कलीसिया समझ चुकी थी कि मसीह का आगमन एक

अद्भुत घटना होगी, परन्तु इसके घटने के समय के बारे में कुछ भ्रांतियाँ थी। उन्होंने सोचा कि उनके समय के किसी भी मसीही की मृत्यु के पहले यह घटना घटित हो जाएगी। जब उनके कुछ प्रिय लोगों की मृत्यु हो गई, तब वे डर गए कि उन्होंने मसीह के द्वितीय आगमन के अवसर को खो दिया। इसलिये, पौलुस ने उनकी भ्रान्ति को दूर किया।

मसीह के पुनरागमन पर, सोए हुए मसीहियों के लिये "आशा" (आयतें 13, 14)। पहले, उसने उन लोगों के बारे में लिखा जो "सो गए हैं" या मर चुके हैं (आयत 13अ)। उसने उन्हें प्रोत्साहित किया "दूसरों के समान शोक न करो जिन्हें आशा नहीं" (आयत 13ब)। अविश्वासी लोगों को मृत्यु के पश्चात् कोई आशा नहीं होती है। ब्रूस ने आशारहित विचार पर टिप्पणी की जो कि यूनानी साहित्य और शिलालेखों में स्पष्ट नजर आता था।[22] प्राचीन काल के एक साधारण समाधिलेख में पढ़ा गया कि "मैं नहीं था, मैं हो गया, मैं नहीं हूँ, मुझे चिंता नहीं।"[23] परिपक्व मसीही इस प्रकार की निराशा का अनुभव नहीं करेंगे।

मसीही जो पहले ही मर चुके हैं, परमेश्वर के द्वारा साथ लाए जाएंगे, जो यीशु को उन्हें "अपने साथ" लाने का कारण ठहराएगा (आयत 14)। वे कब यीशु के साथ होंगे? कुछ लोग मसीह के पुनरागमन से पहले "बादलों पर उठा लिये जाने" पर विश्वास करते हैं। वे निष्कर्ष देते हैं कि, ये पुनः जी उठे संत अंतिम समय आने से पहले गुप्त रूप से पृथ्वी पर से बादलों पर उठा लिए जाएंगे, और फिर यीशु के पुनरागमन पर उसके साथ पृथ्वी पर वापस आएंगे।

पौलुस का वर्णन है कि थिस्सलुनीकियों को अपने प्रिय जनों की जो मर चुके थे चिंता करने की ज़रूरत नहीं थी। यदि वे विश्वासयोग्य मसीही के रूप में मर चुके हैं, वे उसी आशा की बाट जोहेंगे।

जीवित संत सोए हुओं से आगे नहीं बढ़ेंगे (आयत 15)। बहुत से लोगों ने कब्र से आगे की बातों को समझने का प्रयत्न किया। न तो दार्शनिकों ने और न ही आध्यात्मवादियों ने जीवन के पश्चात् बातों का पर्याप्त स्पष्टीकरण दिया। केवल "परमेश्वर का वचन" इस विषय पर प्रकाश डालता है (आयत 15)। यदि हमें अपने प्रियजनों के बारे में जानने की इच्छा है, तो हमें अपने प्रश्नों के उत्तर जानने के लिये वचन की आवश्यकता है।

पौलुस ने लिखा, "हम जो जीवित हैं और प्रभु के आने तक बचे रहेंगे ..." (आयत 15)। क्या "हम" कहने का पौलुस का अर्थ था कि वह विश्वास करता था कि वह तब तक जीवित रहेगा जब तक मसीह का पुनरागमन नहीं हो जाता? कुछ संशयवादी कहते हैं हाँ, परन्तु उस पर वह गलत था। जो लोग पौलुस के लेखों को प्रेरणादायी अध्ययन मानते हैं उन्हें और अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। 1 कुरिन्थियों 6:14 में, पौलुस ने स्वयं को उनमें शामिल किया जो मसीह के पुनरागमन पर सोए हुए हैं (2 कुरिन्थियों 4:14 भी देखें)।

1 थिस्सलुनीकियों 5:10 में, पौलुस ने संकेत किया कि वह नहीं जानता था कि मसीह के पुनरागमन पर वह जीवित रहेगा या मर चुका होगा। पौलुस ने स्वयं को उस समूह के लोगों में शामिल किया जिनके बारे में उसने लिखा।

पौलुस के कहने का तात्पर्य यह नहीं था कि *जब* मसीह आएगा । बल्कि था कि *जब भी* यह होता है, जो जीवित हैं वे सोए हुओं से आगे नहीं बढ़ेंगे। कोई भी उस महान आगमन को नहीं छोड़ेगा!

"*क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा ...*" (आयत 16)। कोई स्वर्गदूत या संदेशवाहक नहीं, परन्तु यीशु आएगा। मसीह का द्वितीय आगमन इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण आना कहलाएगा । पौलुस ने तीन बातों का वर्णन किया जो यीशु के आगमन पर होगा।

वह "ललकार के साथ स्वर्ग से उतरेगा।" यह उसके आने का संकेत है। जो कब्र में पड़े हुए हैं उनके लिये यह मसीह की पुकार है। यीशु ने कहा, "वह समय आता है कि जितने कब्रों में हैं वे उसका शब्द सुनकर निकल आएंगे" (यूहन्ना 5:28, 29अ)। प्रकाशितवाक्य में यूहन्ना ने लिखा, "हर एक आँख उसको देखेगी, वरन जिन्होंने उसे बेधा था वे भी उसे देखेंगे" (प्रकाशितवाक्य 1:7)।

वह "प्रधान स्वर्गदूत के शब्द के साथ ... उतरेगा।" यह सम्भवतः मीकाईल है, पवित्र शास्त्र में केवल वही है जो प्रधान स्वर्गदूत कहलाता है (यहूदा 9)। स्वर्गदूत के शब्द सम्भवतः दूसरे स्वर्गदूतों को "उसके चुने हुओं को इकट्ठा करने की" आज्ञा देंगे (मत्ती 24:31)।

वह "परमेश्वर की तुरही ... के साथ उतरेगा।" सभी तीनों तुरहियों की आवाज, एक के बाद एक सुनी जाएगी। यह वही तुरही है जो "अन्तिम तुरही" कहलाती है (1 कुरिन्थियों 15:52)। यह "परमेश्वर की तुरही कहलाती है" क्योंकि यह मसीह की घोषणा करता है जो पवित्र परमेश्वर है। यह हमें इस्राएलियों को अपने परमेश्वर से सीनै पर्वत पर भेंट करने को बुलाये जाने का भी स्मरण कराता है (निर्गमन 19:19)।

तुरहियों का प्रयोग लोगों को जगाने के लिये भी किया जाता था। यहाँ पर यह उन लोगों को जगाता है जो "सोए हुए" हैं। पौलुस ने केवल मसीहियों के जी उठने का वर्णन किया है। परन्तु, वह विश्वास करता था कि अधर्मी भी जी उठेंगे (प्रेरितों 24:15)। यीशु ने धर्मी और अधर्मी दोनों के पुनरुत्थान के बारे में बताया (यूहन्ना 5:28, 29)।

ये बातें तब प्रगट होंगी जब यीशु उतर आएगा। यही वह बिन्दू है जहाँ पर मसीह हम सब का न्याय करेगा। "जब मनुष्य अपनी महिमा में आएगा और सब स्वर्गदूत उसके साथ आएँगे, तो वह अपनी महिमा के सिंहासन पर विराजमान होगा। और सब जातियाँ उसके सामने इकट्ठा की जाएँगी; और जैसे चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग कर देता है, वैसे ही वह उन्हें एक दूसरे से

अलग करेगा" (मत्ती 25:31, 32)।

तब मसीह अपने चुने हुओं को इकट्ठा करेगा (आयत 17)। अनाज्ञाकारी को आग की झील में डाल दिया जाएगा (प्रकाशितवाक्य 20:15)। परन्तु, मसीहियों का एक अलग ही अनुभव होगा। पौलुस ने सुनिश्चित किया कि, "हम जो जीवित और बचे रहेंगे उनके साथ बादलों पर उठा लिये जाएँगे कि हवा में प्रभु से मिलें; और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे" (आयत 17; देखें मत्ती 24:31)।

यहाँ पर क्रम है जिसके अनुसार ये बातें घटित होंगी। "और जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे" (आयत 16)। वे यीशु का शब्द सुनने के बाद स्वर्गदूतों के द्वारा इकट्ठे किये जाएँगे (देखें यूहन्ना 5:28)। इसके बाद, मसीही, जो जीवित और बचे रहेंगे [पृथ्वी पर] उनके साथ बादलों पर उठा लिये जाएँगे।"

प्रभु के उतर आने का उद्देश्य अपने लोगों को एक साथ इकट्ठा करना था। पवित्र शास्त्र अंतिम समय से कुछ वर्ष पहले कुछ मसीहियों के गुप्त रूप से बादलों पर उठा लिये जाने के बारे में नहीं सिखाता है। जीवित मसीही "उनके साथ बादलों पर उठा लिये जाएँगे"; इस प्रकार दो गुट के लोग इकट्ठे होंगे। वे "बादलों में" मिलेंगे (देखें प्रकाशितवाक्य 1:7)। वे "हवा में" मिलेंगे, जो सम्भवतः संकेत करता है कि मसीह ने पूरी रीति से शैतान, जो "संसार के अधिकार का हाकिम" (इफिसियों 2:2) कहलाता है पर जय पाई है।

"इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे।" उसके साथ हम कहाँ रहेंगे? पृथ्वी पर हम उसके साथ नहीं रहेंगे। वह पृथ्वी पर आएगा, परन्तु केवल ऊपर हवा में। वह अपने पैर उसपर कभी नहीं रखता है! वह ऊपर हवा में रहता है और विश्वास में पाए जाने वालों को "ऊपर ... हवा में" उठा लेता है। किसी भी वचन में पृथ्वी पर हजारों वर्ष तक के राज्य के बारे में नहीं बताया गया है। (प्रकाशितवाक्य 20:2 में प्रयुक्त होने वाले शब्द आलंकारिक है।)

अब प्रभु किसी न किसी रीति से पृथ्वी पर हमारे साथ है। यीशु ने अपने शिष्यों से वायदा किया कि वह हमेशा उनके साथ रहेगा (मत्ती 28:20)। उसके द्वितीय आगमन के पश्चात्, हम बहुतायत से उसके साथ रहेंगे। पौलुस प्रभु के साथ रहना पृथ्वी पर रहने से और भी उत्तम समझता है (2 कुरिन्थियों 5:8; फिलिप्पियों 1:23)। वह मसीह के साथ उस धन्य राज्य में वास करना चाहता था, नाशवान देह के साथ नहीं, परन्तु उसके साथ जो चिरस्थाई है (1 कुरिन्थियों 15:48–52; 2 कुरिन्थियों 5:1)। इस कारण, "हम सदा परमेश्वर के साथ रहेंगे।''

यदि आपको मालूम होता कि मसीह का आगमन आज होगा तो, आपकी प्रतिक्रिया क्या होगी? यह एक महत्वपूर्ण घटना होगी, परन्तु इसका आना आश्चर्यजनक रीति से भी होगा, "जैसे रात को चोर आता है"

(1 थिस्सलुनीकियों 5:2)। यदि वह अचानक आता है, तो उसका स्वरूप जैसे बिजली पूर्व से निकलकर पश्चिम तक चमकती है, के समान होगा (मत्ती 24:27)। संसार की प्रतिक्रिया क्या होगी?

विश्वास में खरे ठहराए गए लोग हर्षित होंगे। पौलुस ने कहा, परमेश्वर उसे "उस दिन ... धर्म का मुकुट देगा; और [उसे] ही नहीं वरन् उन सबको भी जो उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं" (2 तीमुथियुस 4:8)।

अधर्मी ठहराए गए लोग भयभीत होंगे। प्रकाशितवाक्य 6:15, 16 में "राजाओं," "महान पुरुषों" और "धनवानों" का वर्णन मिलता है, जो पृथ्वी पर अनाज्ञाकारी रहे, वे आने वाले न्याय से स्वयं को छिपाएंगे। उनके लिये, मसीह का लौटना एक भयावह अनुभव होगा।

प्रश्न यह है कि: न्याय के समय उसका सामना करने और अपने अनन्त घर में प्रवेश करने के लिये मसीह के लौटने पर क्या हम तैयार रहेंगे? EE

यीशु में पुनः मिलन (4:13–18)

यीशु वापस आ रहा है! यीशु के सुसमाचार का यह एक मौलिक हिस्सा है। यदि मैंने कहा, "यीशु आज वापस आ रहा है!" तो एक बड़ी खलबली मच जाएगी, डर, बेचैनी या आनन्द का भाव उत्पन्न होने लगेगा।

यीशु की वापसी थिस्सलुनीकियों का मुख्य विषय है, जिसकी चर्चा हर एक अध्याय में पाई जाती है। उसकी वापसी आजकल प्रायः एक या दो कारणों से सिखाई जाती है: बहुत से लोग विश्वास नहीं करते कि ऐसा होगा, या बहुत से लोग जो विश्वास करते हैं वे इस रीति से जीते हैं जैसे कि अब न्याय नहीं होने का। थिस्सलुनीकियों में इनमें से कोई भी यीशु की वापसी की चर्चा का कारण नहीं है। मसीही जिन्हें यह पुस्तक लिखी गई थी वे पहले ही से यीशु की वापसी पर विश्वास करते थे। वास्तव में, उसकी वापसी की स्वीकृति उनके मसीही बनने का एक कारण था; वे यीशु से मिलने के लिये तैयार रहना चाहते थे। वे जानते थे कि यीशु का आगमन उससे और दूसरी जगहों में रहने वाले उनके भाइयों के साथ पुनर्मिलन करने का एक सुन्दर अवसर होगा।

परन्तु, जब उन्होंने यीशु के पुनरागमन पर विचार किया, एक संदेह उनके मन में घर कर गया और वे उदास हो गए। जो पहले से मर चुके हैं उनके भविष्य का निर्णय क्या होगा? क्या वे उस महान पुनर्मिलन से वंचित रह जाएंगे? 4:13–18 में, पौलुस ने उनके इस विस्मित करने वाले प्रश्न का उत्तर दिया। परिणाम स्वरुप, उन्होंने यीशु की वापसी को हर्ष के साथ स्वीकार किया।

क्या यीशु की वापसी का उद्देश्य हमें आनन्द से भर देता है? हमारी प्रतिक्रिया क्या होनी चाहिए? इसके निर्णय के लिये, हमें जानकारी प्राप्त करना ज़रूरी है कि क्या होगा जब यीशु आएगा और हमारा व्यवहार उसके प्रति क्या

होगा।

जैसे संसार करता है वैसे हम शोक करने वाले नहीं हैं (4:13)। थिस्सलुनीकियों को अपने मर चुके भाइयों के कल्याण की बड़ी चिंता थी। मृत्यु से, सोते हैं की तुलना का प्रयोग यीशु के द्वारा लाज़र की मृत्यु के बाद किया गया (यूहन्ना 11:11–14)। जीवन सम्बन्धी मामलों में ज्ञान की घटती और संलग्नता की कमी में समानता होने के कारण ऐसा हुआ था। इन मसीहियों को अपने मर चुके भाइयों के कल्याण की बड़ी चिंता होती थी।

बहुत से लोग विश्वास करते हैं कि मृत्यु अन्त—जीवन का अन्त है, इसी कारण, रिश्तों, आशीषों और लाभ का अन्त भी जीवन के साथ चला जाता है। उन्हें इस जीवन के बाद किसी भी बात के होने की आशा नहीं होती है। पौलुस और उसके सहकर्मी जानते थे कि मृत्यु मसीहियों की सभी उन्नतियों का अन्त नहीं होता है (4:13), परन्तु आशीषों के एक समय और अनन्त लाभ का आरम्भ होता है।

थिस्सलुनीके के मसीहियों को प्रतीत होता था कि उनके विचार से यीशु की वापसी का लाभ उन्हें नहीं मिल पाएगा जिनकी मृत्यु पहले ही तब हो चुकी थी जब यीशु आए थे, इसलिये पत्री के इस भाग का लिखा जाना उन्हें सूचना देना था कि जीवन के बाद भी आशा बनी रहती है। मसीहियों को शोक नहीं करना चाहिए जैसे संसार के लोग करते हैं, जिनको कब्र के आगे लाभ की कोई आशा नहीं होती है।

आज लोगों के बीच यह एक जाना माना विचार है कि मृत्यु केवल दुःख का समय होता है। हमें इस प्रकार से प्रतिक्रिया नहीं करनी है, क्योंकि हमारी आशा यीशु में है!

हम जीवन के पश्चात् मृत्यु के लिये शोक करने वाले नहीं हैं (4:14)। वाक्यांश "यीशु में सोए हुए" उत्साहपूर्ण है। थिस्सलुनीके के मसीहियों के लिये, इसका अर्थ था कि परमेश्वर अभी भी उन्हें जानता, उनके विषय में सोचता और उनके भाइयों की चिंता करता था जो मर चुके थे। पहली सदी में यहूदियों से बात करते समय, यीशु ने कहा था कि विश्वासयोग्य मनुष्य "अब्राहम की गोद" में पाए जाते हैं (देखें लूका 16:22), इस विचार से बाकी विश्वासयोग्य यहूदी लोगों को शांति का बोध हुआ होगा। मर चुके मसीहियों के भविष्य के बारे में चाहे कोई भी अनिश्चितता हो, थिस्सलुनीके की कलीसिया जानती थी कि वे परमेश्वर के हाथों में सुरक्षित थे।

यीशु ने इंगित किया कि जब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि वह "अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर" था (निर्गमन 3:6), इसका तात्पर्य था कि ये विश्वासयोग्य यहूदी मृत्यु होने के पश्चात् भी, अस्तित्व में अभी भी पाए जाते थे (देखें मत्ती 22:32)। क्योंकि परमेश्वर

जीवितों का परमेश्वर है, एक प्रकार से इसका तात्पर्य था कि अब्राहम, इसहाक और याकूब अभी भी जीवित थे, परमेश्वर की सुरक्षा में थे और पुनरुत्थान होने पर वापस आएंगे।

थिस्सलुनीकियों के पास पहले से ही मृत्यु के बाद की आशीषों की आशा की कुंजी थी; उन्होंने यीशु को उसके पुनरागमन पर मिलने की योजना बनाई थी! मृत्यु के पश्चात् जीवन में प्रवेश होता है (4:14)! यीशु स्वयं एक बार मरा परन्तु अब जीवित है। ये मसीही मरे हुओं के जी उठने पर विश्वास करते थे: उनका विश्वास था कि अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिये जैसे परमेश्वर ने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया, वैसे ही वह उनके भाइयों और बहनों को उस आनन्द का लाभ उठाने का अवसर देगा जिसकी प्रतिज्ञा उसने उनसे की थी!

क्या हम मृत्यु को आशा का अन्त होना समझते हैं, या जब विश्वासी मरते हैं तब उसे मात्र एक घटना के रूप में देखते हैं? क्या हम केवल यही सोचते हैं कि हमारी स्वयं की मृत्यु होने पर हम क्या खोएंगे, और इसी कारण मृत्यु को एक डरावना अनुभव समझते हैं? क्या हम मृत्यु के आगे क्या, सोचकर डर जाते हैं? पौलुस ने फिलिप्पियों से कहा, "क्योंकि मेरे लिये जीवित रहना मसीह है, और मर जाना लाभ है"; उसने कहा कि उसका "जी तो चाहता है कि कूच करके मसीह के पास जा रहूँ, क्योंकि यह बहुत ही अच्छा है" (फिलिप्पियों 1:21, 23)। मृत्यु को परमेश्वर में भरोसे का अनुभव और मृत्यु में उसकी सुरक्षा के आनन्द के साथ स्वीकार करना मसीही परिपक्वता का एक चिन्ह है।

यीशु के पुनरुत्थान के द्वारा परमेश्वर पर विश्वास रखना, वास्तव में, मृत्यु के भय पर जय पाने का एकमात्र रास्ता है। जिसका परमेश्वर में विश्वास न हो वे जो कुछ उनके पास होता है उसे खोने के खतरे का सामना करते हैं। जो विश्वास करते हैं कि परमेश्वर मनुष्य की समझ से परे है, वे मृत्यु के आगे होने वाली बातों पर संदेह करते हैं। केवल वही जो परमेश्वर में विश्वास रखते हैं इस जीवन के समाप्त हो जाने के बाद आशीषों के अधिकारी हो सकते हैं। परमेश्वर पर भरोसा रखें कि मृत्यु के बाद जीवन है!

हम शोक करने वाले नहीं हैं, क्योंकि सोए हुए यीशु के आने तक बचे रहेंगे (4:15, 16)। सच कि यीशु के आने पर कुछ मसीही जीवित बचे रहेंगे इसका अर्थ यह नहीं था कि जो पहले ही मर चुके थे यीशु की वापसी का लाभ उन्हें नहीं मिल पाएगा। मसीह में मरे हुए लोग "उसके साथ" कब्र से बाहर लाए जाएँगे (4:14)।

यीशु के पुनरागमन की तीन जानकारियाँ संक्षेप में आयत 15 और 16 में हमारे लिये स्पष्ट रूप में दी गई है। पहला, प्रभु स्वर्ग से आएगा। जिस प्रकार यीशु स्वर्ग की ओर ऊपर चढ़ गया, और आँखों से ओझल होने लगा, उसके चेलों को कहा गया, "… 'हे गलीली पुरुषो, तुम क्यों खड़े स्वर्ग की ओर देख रहे हो?

यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा'" (प्रेरितों 1:11)। यीशु के आगमन की प्रतिज्ञा उतनी ही सच्ची थी जितनी उसके चले जाने की। थिस्सलुनीकियों ने इसका विश्वास किया; यह सुसमाचार सन्देश का और उनके मसीही बनने के कारण का हिस्सा था (1:10)।

दूसरा, प्रधान स्वर्गदूत का शब्द सुनाई देगा और परमेश्वर की तुरही फूँकी जाएगी। उसके पुनरागमन की घोषणा ऊँचे शब्दों से की जाएगी; कोई भी बचा नहीं रह जाएगा—जीवित या मृत! परमेश्वर की सामर्थ्य जो सारे भूमण्डल को बनाने और नियंत्रण करने के लिये सिर्फ "उसकी गति का किनारा" कहा गया (अय्यूब 26:14)! यीशु के पुनरागमन की घोषणा के लिये परमेश्वर बड़ी सरलता से संसार का ध्यान खींच लेगा।

तीसरा, मरे हुए जी उठेंगे। पहली सदी में यह प्रेरितों के प्रचार का मुख्य विषय था। प्रेरितों 4:33 में हम पढ़ते हैं "प्रेरित बड़ी सामर्थ्य से प्रभु यीशु के जी उठने की गवाही देते रहे ..." यह चमत्कार था जिसने यीशु के ईश्वर होने के प्रमाण को पूरा किया। केवल परमेश्वर ही यीशु को वापस जीवन में ला सकता था। यीशु "पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ्य के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है ..." (रोमियों 1:4)। यीशु के जी उठने के कारण, मरने के बाद भी मसीही सदा के लिये बचे रहने की ओर आशा लगा सकते हैं, जिस प्रकार हम भी उसके जी उठने पर करेंगे। हम पढ़ते हैं, "देखो, मैं तुम से भेद की बात कहता हूँ: हम सब नहीं सोएँगे, परन्तु सब बदल जाएँगे। और यह क्षण भर में, पलक मारते ही अन्तिम तुरही फूँकते ही होगा: क्योंकि तुरही फूँकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाएँगे, और हम बदल जाएँगे" (1 कुरिन्थियों 15:51, 52)। अन्तिम बार पुनः इकट्ठा होना, अविनाशी देह प्राप्त करने के लिये मसीह में मरे हुओं को जिलाने का पहला भाग होगा। फिर उनका यीशु के साथ सदा-सदा के आनन्द का आरम्भ होगा।

हम शोक करने वाले नहीं हैं, क्योंकि जीवित और बचे हुए लोग सदा प्रभु के साथ रहेंगे (4:17)। मसीह में मरे हुओं पर दृष्टि बनाए रखने के उपरान्त, परमेश्वर की दृष्टि बचे हुओं पर बनी रहेगी ताकि वे जी उठे पवित्र लोगों के साथ, सदा के लिये यीशु के साथ रह सकें (4:17)। यह आयत उस बड़े पुनर्मिलन का जो "हवा में" होने वाला है, वर्णन करती है और गुप्त रूप से यीशु के पुनरागमन और पृथ्वी पर दिखाई देने के विचार को झूठा ठहराती है। इसका अर्थ यह भी है कि यीशु का अपने राज्य को स्थापित करने के लिये आने का विचार सच नहीं है। इस पृथ्वी पर अपने सन्तों के साथ अनंतता व्यतीत करने की परमेश्वर ने कोई योजना नहीं बनाई है।

पवित्र शास्त्र हमें निश्चय दिलाता है कि "आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा" और "पृथ्वी और उस पर के काम जल जाएँगे" (2 पतरस 3:10)। हमें सदा स्मरण रखना चाहिए कि "हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है; और हम एक उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के वहाँ से आने ही बाट जोह रहे हैं" (फिलिप्पियों 3:20)। यीशु के आने पर, हम परमेश्वर के दिए नए, अनन्त घर की ओर आस लगाए देखते हैं। पतरस ने कहा, "उस की प्रतिज्ञा के अनुसार हम एक नए आकाश और नई पृथ्वी की आस देखते हैं जिन में धार्मिकता वास करेगी" (2 पतरस 3:13)।

हम शोक करने वाले नहीं हैं, परन्तु मसीही भाइयों को शान्ति देते रहें (4:18)। थिस्सलुनीके के मसीही अपने मर चुके भाइयों की बड़ी चिंता करते थे कि उनके भविष्य में क्या रखा है। और अब उन्हें सही परिस्थिति के बारे में बताया गया, वे यह सोचकर न पछताएँ कि जो मर चुके थे, वे यीशु के साथ पुनर्मिलन का अवसर खो चुके थे। उनका अपने भाइयों और यीशु के साथ पुनर्मिलन जरूर होगा और वे एकसाथ परमेश्वर की अनंतता की सभी आशीषों के साथ आनन्द मनाएंगे।

केवल मसीहियों को मृत्यु के बाद जीवन की निश्चय आशा होती है। जैसे कि मसीह के पीछे चलने वाले और उसके पुनरुत्थान में विश्वास करने वाले, हम अपने मसीही भाइयों को शान्ति दे सकते हैं जब उनके विचार मृत्यु की ओर बदल जाएँ, चाहे उनकी स्वयं की मृत्यु हो या उनके किसी भाई या बहन की हो (4:18)।

उपसंहार। यीशु के आने की सच्चाई का प्रकाशन सुरक्षा और शान्ति को लाता है, उनके लिये जो परमेश्वर के साथ सच्चे हैं। मसीही जीवन में समस्याएँ और तनाव है, जैसा कि इन मसीहियों ने अनुभव किया; परन्तु जब यीशु आएगा, हर एक समस्या का अन्त हो जाएगा। TP

जो प्रभु में सो गए हैं (4:13–18)

ऐसा प्रतीत होता है कि थिस्सलुनीकियों ने मसीह के आने की निश्चय आशा को समझने में गलती कर दी। एक गलत धारणा बन गई थी कि जो पहले ही मर चुके थे उन्होंने किसी तरह मसीह के द्वितीय आगमन के अवसर को खो दिया होगा। जिस प्रकार पौलुस ने मसीह के आने के बारे में समझाया, उन्हें अपने प्रियजनों के बारे में जो मसीह में सो चुके थे किस प्रकार सोचना चाहिए इस बात को पूरी रीति से स्पष्ट करने के लिये उसने समय लिया।

"उनके नाई शोक न करो जिन्हें कोई आशा नहीं होती।" पौलुस ने अपने प्रियजन की मृत्यु पर रोने के लिये मना नहीं किया (यूहन्ना 11:35), परन्तु अपने प्रियजन के लिये जिनकी कोई आशा नहीं होने पर रोने के लिये मना

किया। जो बिना आशा के मर जाते हैं मृत्यु उनके लिये निराशा लाती है; परन्तु मसीहियों की महिमान्वित आशा मसीह में है, और इसके द्वारा अनन्त शान्ति है।

"सुनिश्चित कर ले कि हम अपने प्रिय जनों को फिर से देखेंगे।" जिस रीति से उन्होंने यीशु की मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान पर विश्वास किया उसी रीति से विश्वास करना चाहिए कि वे अपने प्रिय जनों को फिर से देखेंगे। कलीसिया का बड़ा मुखिया होने के कारण, यीशु मुर्दों में से जी उठा और सदा सदा के लिये जीवित है। उनके मुर्दों में से जी उठने के द्वारा, वह सभी छुड़ाए हुओं की अगुवाई करेगा। जब वह आएगा, हमारे प्रिय जनों को अपने साथ लाएगा (4:14)।

"स्मरण हो कि हम जो जीवित हैं, प्रभु के आने तक बचे रहेंगे, सोए हुओं से कभी आगे न बढ़ेंगे" (आयत 15)। जो लोग बचे हुए हैं वे जो मसीह में सो गए हैं उनसे आगे नहीं बढ़ेंगे। पवित्र लोग जो बिछड़ गए, वे यीशु के आने पर कुछ भी नहीं खोएंगे। यीशु के आने पर हम उनके साथ हवा में फिर से मिलेंगे (4:17)। द्वितीय आगमन पर उनके पास मुख्य स्थान होगा।

"आइए हम विश्वास करें कि बचे हुए लोग फिर से सोते हुए सन्तों के साथ मिलेंगे." यीशु को इस पृथ्वी पर पैर रखते हुए चित्रित नहीं किया गया है। यीशु से मिलने के लिये बचे हुए लोग बादलों पर उठा लिये जाएँगे और सोए हुए सन्त हवा में मिलेंगे।

"आइए हम स्मरण करें कि अपने प्रिय जनों से फिर से मिलने के पश्चात्, हम सदा यीशु और छुड़ाए हुए लोगों के साथ रहेंगे।" जैसा कि हम जानते हैं द्वितीय आगमन अन्त के समय को लाएगा। हम हवा में उठा लिये जाएँगे और सभी उद्धार पाए हुए लोगों के साथ आनन्द मनाने अपने अनन्त घर स्वर्ग में ले जाए जाएँगे।

द्वितीय आगमन की चर्चा पाठकों को डराने के लिये नहीं की गई; उन्हें शान्ति देने के लिये यह उनके सामने प्रस्तुत की गई। ये शब्द हमें शान्ति देते हैं, हमारे लिये एक बड़ी आशा को लाते हैं जिसे हम स्वीकार करते हैं। इन वचनों को चिन्ता बढ़ाने के लिये नहीं लिखा गया था; इन्हें जीत जो हमारी प्रतीक्षा करती है हमें दिखाने के लिये लिखा गया था। EC

"रोओ मत" (4:13–18)

थिस्सलुनीकियों ने देखा यीशु का महिमा के साथ आना उन लोगों के लिये था जो पृथ्वी पर जीवित थे। वे आश्चर्य करने लगे कि प्रिय जन जो मसीह में मर गए, मसीह के पुनरागमन पर उनका क्या होगा। वे सोचने लगे कि जो मर

गए वे बहुत कुछ नहीं, सब कुछ खो देंगे। इस कारण वे उन प्रिय जनों पर शोक करने लगे जो मर चुके थे, सोचने लगे की एक बड़ी त्रासदी उन पर आ गिरी।

पौलुस ने उनसे कहा, "उनपर शोक मत करो। तुम्हें ऐसा करने की जरूरत नहीं है। मसीह के आने पर उनका स्थान महिमान्वित होगा।" फिर, पौलुस ने कारणों को रखा कि उन्हें क्यों उनपर जो पहले ही मर चुके थे रोना नहीं चाहिए।

"उनके लिये मत रोओ, क्योंकि यीशु ने कर दिखाया।" हम मसीह की देह हैं। इस देह का मुखिया होने के नाते, उसने उसके मृतकों में से जी उठने के द्वारा हमारी अगुवाई की। जिस प्रकार वह सचमुच जी उठा, हम भी जी उठेंगे। यीशु का पुनरुत्थान हमारे विश्वास के केन्द्र पर है। यह उसके ईश्वरीय गुण, उसके वचन और अनन्त जीवन की उसकी प्रतिज्ञा को प्रमाणित करता है।

"उनपर दुःख मत जताओ क्योंकि परमेश्वर करने जा रहा है।" जो उनमें सो चुके थे यीशु उन्हें अपने साथ ले जा चुका है। जब यीशु आएगा परमेश्वर हमें उन लोगों के साथ फिर से मिलाएगा। मसीही होने के नाते, कभी भी हमें अलविदा नहीं कहना है। हम अपने प्रियजनों के साथ परमेश्वर के अनन्त शहर में इकट्ठे रहेंगे।

जीवित पवित्र लोग सोए हुए पवित्र लोगों से आगे नहीं होंगे। जो पहले जा चुके हैं वे कुछ भी नहीं खोएंगे। वे मसीह की महिमा के साथ आने का अवसर नहीं खोएंगे। उनके विचार बहुत अच्छे होंगे, क्योंकि वे मसीह के साथ हवा में होंगे।

"उन पर शोक मत मनाओ क्योंकि मसीही अनुभव करने जा रहे हैं।" मसीह का आगमन हम सब को सदा के लिये एकसाथ लाएगा। मसीही काल के समापन में मसीह मार्ग तैयार करेगा, और सभी छुड़ाए हुए लोग मसीह के साथ अनन्त महिमा में प्रवेश करेंगे।

जो लोग हमसे पहले चले गए हैं हम उन्हें स्मरण रखेंगे या नहीं के प्रश्न को पौलुस सम्बोधित नहीं कर रहा था। निश्चय ही, हम ऐसा करेंगे। यहाँ तक की हम उनकी विदाई पर रोएंगे भी। वह उस आशा के बारे में बता रहा था जो हमें मसीह में है। यहाँ पर बहुत से लोग हैं जिनके पास कोई आशा नहीं होती, मसीही के पास एक आशा होती है जो कि मसीह के पुनरुत्थान के तथ्य पर आधारित रहता है। EC

अन्त के समय की ओर ताकना (4:16–18)

यद्यपि पौलुस ने अध्याय के इस भाग में अन्त के समय के बारे में कई आयाम प्रस्तुत किया, परन्तु उसने हमें उन सभी बातों के बारे में नहीं बताया जो मसीह के आने पर होगी। यदि इस भाग को दूसरे भागों से मिलाएँ जो अन्त

पर चर्चा करते हैं, तो हमारे पास अंतिम दिनों में जो होने वाला है उसका एक सम्पूर्ण चित्र होगा।

इतिहास के अन्तिम अध्याय पर मनन करने पर मसीही शान्ति पाएंगे और अविश्वासी-मसीही दोषी ठहराए जाएँगे।

यीशु आएगा। वह चोर के समान (2 पतरस 3:10), बादलों के साथ (प्रकाशितवाक्य 1:7), धधकती हुई आग के साथ (2 थिस्सलुनीकियों 1:7), और सब स्वर्गदूतों के साथ (मत्ती 25:31) आएगा। हर एक आँख उसके आगमन को देखेगी (प्रकाशितवाक्य 1:7)।

ललकार के साथ वह स्वर्ग से उतरेगा। "ललकार" के लिये प्रयोग किया गया यूनानी शब्द एक सैन्य भाषा है, जो आदेश की घोषणा संकेत करती है। हो सकता है कि यह आदेश मरे हुओं को उनकी कब्रों से बुलाए (यूहन्ना 5:28, 29)। प्रधान स्वर्गदूत का शब्द सुनाई देगा, परन्तु हम नहीं जानते कि वह क्या कहेगा। हो सकता है कि वह इस संसार से जुड़ी सभी वस्तुओं के अन्त के बारे में घोषणा करे। फिर, तुरही फूँकी जाएगी। पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 15:52 में बताया है कि यह शब्द मरे हुओं के जी उठने और रहन सहन के तुरन्त बदल जाने का संकेत होगा। आयत 16, बाइबल में सबसे शोरगुल वाली आयत है, जिसमें सभी तीन सुनाई देने वाले शब्द पाए जाते हैं जो हमारे प्रभु के आगमन पर एकसाथ सुनाई देंगे।

मुर्दे जी उठेंगे। सामान्य पुनरुत्थान में धर्मी और अधर्मी दोनों का जी उठना होगा (यूहन्ना 5:28, 29)। पौलुस ने इस भाग में अधर्मी के जी उठने के बारे में नहीं बताया है, क्योंकि उसने उन मसीहियों का क्या होगा जो सोए हुए थे पर अपना ध्यान केन्द्रित किया।

न्याय का समय आएगा। यीशु ने कहा कि, जब वह आएगा सब जातियाँ उसके सामने इकट्ठा की जाएँगी। फिर उन जातियों को एक दूसरे से अलग किया जाएगा, जैसे चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग कर देता है (मत्ती 25:31–34)। इस महान घटना के समय, हर एक आत्मा को उसके अनन्त प्रतिफल के लिये भेज दिया जाएगा। हम न्याय से अनंतता की ओर जाएँगे।

पौलुस ने इस भाग में न्याय के विषय में चर्चा नहीं की है, क्योंकि उसने छुटकारे की पूर्व कल्पना की थी, जिसे मसीहियों ने मसीह के द्वारा पहले ही प्राप्त कर लिया था। पौलुस के मन में, न्याय पर मसीहियों की जीत आगे बढ़ जाने का परिणाम था।

समय अनंतता में मिल जाएगा। न्याय के आगे सदा की अनंतता होती है। पृथ्वी टल चुकी होगी, और नए आकाश और नई पृथ्वी दिखाई देंगे (2 पतरस 3:11–13)। समय जैसा कि हम जानते हैं अब और नहीं रहेगा क्योंकि पृथ्वी अब और नहीं रहेगी।

हम अपने अनन्त घर को जाएँगे। न्याय परमेश्वर के मार्गों को अन्तिम रूप देता है और उसके ईश्वरीय निर्णयों का समर्थन करता है। यह अधोलोक और पृथ्वी के समय का अन्त करेगा। धर्मी अनन्त जीवन पाएंगे और अधर्मी अनन्त मृत्यु के भागी होंगे (मत्ती 25:46)।

ये सच्चाइयाँ विचारों को कितना उत्तेजित करने वाली हैं! ये उन सबको जोड़ती हैं जो जीवित हैं या जीवित होंगे। ये नियुक्ति का सुझाव देते हैं जो एक दिन हम सब के पास होगी। ये हमें हमारी अनंतता की यात्रा के बारे में बताती हैं, हमें सच्चाई को दिखाती हैं कि हम कहाँ जा रहे हैं, हमें हमारे भविष्य की एक झलक दिखलाती हैं जिस रीति से सब बातों के अन्त का वर्णन करती हैं। हमारे सामने प्रेरणा से लिखे शब्दों के द्वारा लाया गया, लिखा गया यह भाग बताता है कि कैसे सब सांसारिक और भौतिक बातें अपने अस्तित्व से मिट जाएँगी।

ये बातें सत्य हैं। प्रेरित लेखक अनुमान नहीं लगा रहे; वे हमें परमेश्वर का प्रकाशन दे रहे हैं। हमने इस सच्चाई को देखा है कि परमेश्वर ने हमें अन्त का ज्ञान दिया है। EC

समाप्ति नोट्स

[1]लियोन मॉरिस, *द फर्स्ट एण्ड सेकेंड एपिस्टल टू द थिस्सलोनियंस,* द न्यू इंटरनेशनल कमेंट्री आन द न्यू टेस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मीशीगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1959), 120. [2] एफ. एफ. ब्रूस, *1 & 2 थिस्सलोनियंस*, वर्ड बिब्लिकल कमेंट्री, वोल्यूम 45 (वाको, टेक्सासः वर्ड बुक्स, 1982), 82. [3]जेम्स हॉप मूल्टन और जॉर्ज मिलिगन, *द वोकाब्यूलरी आफ द ग्रीक टेस्टामेंटः इलस्ट्रेटेड फ्रॉम द पापायरी एण्ड अदर नोन-लिटरेरी सौर्सेस* (ग्रैंड रैपिड्स, मीशीगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1952), 362. [4]वाल्टर बाऊर, *ए ग्रीक-इंगलिश लेक्सीकन आफ द न्यू टेस्टामेंट एण्ड अदर अर्ली ख्रिश्चयन लिटेरेचर*, तीसरा संस्करण, संशो. और संपादक फ्रेडरिक विलियम डैंकर (शिकागोः यूनीवर्सिटी आफ शिकागो प्रेस, 2000), 748. [5]मॉरिस, 124, में उधृत। [6]ए. टी. राबर्टसन, *दि एपिस्टल आफ पौल,* वोल्यूम 4, *वर्ड पिक्चर्स इन द न्यू टेस्टामेंट* (नैशविलः ब्रॉडमैन प्रेस, 1931), 29. [7]ब्रूस, 86. [8]मौरिस, 130. [9]रॉबर्टसन, 31. [10]ध्यान करें कि *यंग्स लिटरल ट्रान्सलेशन* आयत 14ब को कहती है कि "ऐसे ही परमेश्वर उनको जो सोते हैं मसीह के द्वारा उसके साथ लाएगा" (ज़ोर जोड़ा गया है)।

[11]मौरिस, 140. [12]*द न्यू इन्टरनैशनल डिक्षनरी ऑफ न्यू टेस्टामेन्ट थियौओजी*, एड. कोलिन ब्राउन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः ज़ोन्डरवैन पबलिशिंग हाउस, 1976), 2:887 में प्रेजेंट. [13]जे. डब्ल्यू. मक्गार्वी और फिलिप वाए. पेन्डलटन, *थिस्सलोनियन्स, कोरिन्थियन्स, गलेशियन्स एन्ड रोमन्स*, द स्टैन्डर्ड बाइबल कॉमेन्ट्री (सिनसिनाटी, ओहियोः स्टैन्डर्ड पबलिशिंग फाउन्डेशन, 1916), 20. [14]डेविड जे. विलियम्स, *1 & 2 थिस्सलोनियन्स*, न्यू इन्टरनैशल बिबलिकल कॉमेन्ट्रीः न्यू टेस्टमेंट सीरीज़, वोल. 12 (पीबॉडी, मैसाचुसेट्स.: हैन्ड्रिकसन पबलिशर्स, 1992), 82. [15]मौरिस, 141. [16]रॉबर्टसन, 32. [17]आई. हॉवर्ड मार्शल,

1 & 2 थिस्सलोनियन्स, न्यू सेंच्युरी बाइबल कॉमेन्ट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैन्स पबलिशिंग को., 1983), 127. [18]विलियम्स, 83. [19]देखें बाऊर, 538. [20]मौरिस, 145.

[21]*चार्ल्सटन डेली मेल* (चार्ल्सटन, वेस्ट वर्जिनिया), 8 सितम्बर 1994. [22]ब्रूस, 96. [23]एवेरेट फेरगुसन, *बैकग्राउन्ड्स ऑफ़ अर्ली क्रिस्टियानिटी*, 2ड एड. (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: डब्ल्यू. बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1993), 232.